कूट नाम

तरहड़िमे गोहि

कूट नाम

तरहड़िमे गोहि

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह · Videha

कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

© गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीति ठाकुर,2022 2026

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमति बिना एहि पोथीक कोनो अंशक पुनरुत्पादन नहि।

प्रकाशक : विदेह (videha.co.in)

ई एकटा मौलिक औपन्यासिक कृति थिक। एहिमे प्रस्तुत सभ पात्र, घटना, संस्था आ स्थान काल्पनिक थिक। कोनो जीवित वा मृत व्यक्ति, वास्तविक घटना, अथवा कोनो अन्य प्रकाशित कृतिसँ एकर कोनो सम्बन्ध नहि; जँ कतहु सादृश्य प्रतीत हो, तँ ओ संयोगमात्र थिक।

विषय-सूची

अध्याय ०	1
अध्याय १ : नाम बिना जाल	8
अध्याय २ : कार्यदलक नव पानि	18
अध्याय ३ : दू पानिक संगम	25
अध्याय ४ : पहिल गिट्ठऽ	31
अध्याय ५ : नाम बदलल, निशान बचल	38
अध्याय ६ : दूरीक द्वन्द्व	45
अध्याय ७ : बूढ़ गोहिक छाया	50
अध्याय ८ : जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल	56
अध्याय ९ : अनुमान आ प्रमाण	63
अध्याय १० : दरार	68
अध्याय ११ : किनार	73
अध्याय १२ : जलसमाधि	78
उपसंहार/ अध्याय ० : जालक भीतर जाल	85

अध्याय ०

चन्ना गाछीक ओइ पाछाँ भागक धोधरि बरख भरि एक्के रंग रहैत छल।

बाहर मौसम बदलैत — कखनो जाड़क कुहेस, कखनो बरखाक झिस्सी, कखनो गरमीक तबैत दुपहरिया — मुदा एहि धोधरिमे खाली एक्के गन्ध रहैत छल : पुरान कागचक गन्ध, सिमसिमाइत गन्ध, आ ओहि धूरा-गर्दाक गन्ध, जे बरख-बरखसँ फाइलक कोरपर जमैत रहल छल।

नन्द आरुणि एहि धोधरिकेँ चिन्हैत छलाह, जेना कियो अपन बच्चाबला घरकेँ चिन्हैत अछि। आँखि मूनि कऽ कोन पेटार कतऽ अछि, कोन ताखपर कोन बस्ता, कोन कोनमे ओ पुरान लोहाक अलमीरा, जकर कब्जा खोलैत काल चियाँ केर अबाज करैत अछि — सभ किछु हुनका मोन छल।

गोप कुमार एहि कोठरीक रखवार छलाह।

ओ बूढ़ भऽ गेल छलाह, मुदा बुढ़ापा हुनकर आँखिकेँ झलफल नहि केने छल — खाली धीर बना देने छल। ओ कम बजैत छलाह; आ जखन बजैत छलाह, तखन एहन बजैत छलाह जेना सभ शब्दकेँ पहिने भीतर तौलि लेने होथि।

दुनू गोटेक बीच एकटा पुरान नियम छल। नन्द फाइल पढ़ैत छलाह; गोप कुमार ओकर अर्थ बजैत छलाह। नन्द घटना देखैत छलाह; गोप कुमार ओहि घटनाक पाछाँ नुकायल

नियम देखैत छलाह। एहि तरहेँ, बरख-बरखसँ, ओ दुनू गोटे नगरक अपराधक स्मृतिकेँ पढ़ैत आयल छलाह — ओहि स्मृतिकेँ, जकरा न्यायालय बन्द कऽ चुकल छल, मुदा जकरा इतिहास एखनहुँ नहि बुझने छल।

ओहि साँझ नन्द खटाँसवला मोटरी बन्द केने रहथि।

❖

ओ मोटरी पुरान छल। ओकर फित्ता घसल, कागच पीयर, आ ऊपर लाल पेंसिलसँ लिखल शीर्षक अधमेटायल — "खटाँस मारल गेल।"

नन्द ओहि मोटरीकेँ पेटारमे राखि देने रहथि, मुदा हुनकर हाथ एखनहुँ किछु झाड़ि रहल छल। जेना कागच बन्द भेलाक बादो ओकर धूरा-गर्दा आँगुरपर लागल रहि गेल हो। जेना ओहि पुरान साँझक गोली, ओहि पुरान भयक चुप्पी, ओहि पुरान नगरक फुसफुसाहटि — सभ किछु हुनकर आँगुरमे सटि गेल हो।

"किछु फाइल हाथ धोलासँ नहि छुटैत अछि गोप बाबू," ओ आस्तेसँ कहलनि।

गोप कुमार किछु नहि बजला।

ओ खाली दोसर पेटार दिस देखलनि।

❖

ओ पेटार पुरानसँ अलग छल।

पुरान पेटारपर सिमसिमायल गोल दाग छल, लाल स्याहीक शीर्षक छल, बरख-बरखक धूरा-गर्दा छल। एहि नव पेटारपर किछु नहि छल — खाली एकटा साफ, नव फित्ता, आ ऊपर पेंसिलसँ हल्लुक हाथे लिखल दू शब्द : "बादक पानि।"

"ई की?" नन्द पुछलनि।

"जे कथा अहाँ अखन-तुरत्ते बन्द केलहुँ," गोप कुमार कहलनि, "ओकर अन्तिम पंक्ति मोन अछि?"

नन्द मोन पाड़लनि।

ओ अपने ओहि मोटरीपर अपन हाथसँ लिखने रहथि — "नाम समाप्त भेल; स्मृति नहि। भय समाप्त भेल; इतिहासक प्रश्न नहि।"

"आ हम की कहने रही?" गोप कुमार आगाँ बढ़ला। "हम कहने रही — गोहि मरल, मुदा पानि साफ भऽ गेल, ई लिखब गलती हएत। किएक तँ गोहि व्यक्ति सेहो होइत अछि, जाल सेहो। व्यक्ति मरि जाइत अछि; मुदा जालक तरीका, यदि समाज नहि बुझलक, तँ दोसर नामसँ फेर उगि सकैत अछि।"

ओ दोसर पेटारक फित्ता खोललनि।

"ई ओही जालक दोसर नाम थिक।"

❖

नन्द भीतर देखलनि, आ ठमकि गेलाह।

पहिल पेटारमे जे-जे रहैत छल, ओहिमे किछु नहि छल।

गोलीक खोखा नहि। रक्तक दाग नहि। पोस्टमार्टमक कागच नहि। गवाहक बयान नहि। ओहि मुन्हारि-साँझक तिथि नहि, जाहि साँझ नगरमे कियो खसल हो।

एहिमे खाली संख्या छल।

पन्ना-पर-पन्ना, संख्या। फोनक संख्या, खाताक संख्या, कार्डक संख्या; एहन-एहन अंक, जकर अर्थ नन्दकेँ पहिने बूझल नहि छल। बीच-बीचमे स्क्रीनक छापल चित्र — कारी पृष्ठभूमिपर हरियर आ उज्जर आखर। आधा-अंग्रेजी, आधा-अनचिन्हार शब्द। आ बेर-बेर, किछु पन्नाक बाद, एकटा हस्ताक्षर — जे नाम नहि छल, खाली एकटा चकरगर, अजीब आखर सन —

तलगोहि।

नन्द ओहि शब्दकेँ बहुत काल धरि तकैत रहलाह।

"ई कोन भाषा थिक, गोप बाबू?" ओ अन्तमे पुछलनि। "एहिमे ने शोनित अछि, ने लहाश। एहिमे खाली गनती अछि। ई अपराध केना भेल? के मरल? कतऽ मरल?"

गोप कुमार आस्तेसँ कहलनि — "एहिमे लहू नहि अछि, नन्द बाबू। मुदा एहिमे ओहिसँ बेसी लोक लुटायल अछि, जतेक खटाँस पूरा जीवनमे लूटने छल।"

नन्द फेर पन्ना पलटी केलनि।

"बिनु गोली?"

"बिनु गोली। बिना दरबज्जा तोड़ने। बिना ककरो घर घुसने।" गोप कुमार खिड़की दिस देखलनि। "पहिल पानिक गोहि दरबज्जा तोड़ैत छल। एहि पानिक गोहि दरबज्जा नहि तोड़ैत अछि— ओ हजार कोस दूर बैसल, तोहर घरक भीतर घुसि जाइत अछि, आ तोरा बुझलो नहि होइत छौ जे केओ आयल छल।"

❖

बाहर चन्ना गाछी चुप छल।

कमला-बलानक दिससँ हल्लुक हावा आबि रहल छल। पीपरक पात बेर-बेर जेना सिहरि उठै छल, ओना हावा ओतेक तेज नहि छल — जेना ओ पात कोनो एहन बातकेँ सुनि रहल हो, जे मनुष्यक कानसँ बहुत नीचाँ बजैत हो।

नन्द ओहि साँझ पहिल बेर बुझलनि जे ओ केहन संसारमे पैसि रहल छथि।

ओ पुरान संसारक आदमी छलाह। ओ संसार, जाहिमे अपराधक एकटा चेहरा होइत छल, एकटा आवाज, एकटा गाड़ी, एकटा गोली। ओ संसार डरौन छल, मुदा ओकरा देखल जा सकैत छल। ओकरा बुझल जा सकैत छल। ओकरा — कठिनसँ कठिन — पकड़लो जा सकैत छल।

मुदा ई नव संसार अलग छल।

एहिमे अपराधक कोनो स्पष्ट चेहरा नहि छल। कोनो आवाज नहि, कोनो गाड़ी नहि, कोनो गोली नहि। एहिमे खाली संख्या छल, आ ओहि संख्याक पाछाँ एकटा हस्ताक्षर, आ ओहि हस्ताक्षरक पाछाँ — किछु नहि। एकटा नाम, जे नाम नहि छल। एकटा मनुष्य, जे स्वयंकेँ मेटा चुकल छल।

"गोप बाबू," नन्द आस्तेसँ पुछलनि, "जकर चेहरा नहि, ओकरा हम केना पकड़ब?"

गोप कुमार पहिल बेर कने मुस्की देलनि।

"एही प्रश्नक उत्तर अही फाइलमे अछि, नन्द बाबू। तेँ हम अहाँकेँ ई फाइल दऽ रहल छी। पढ़ू। मुदा एक बात मोन राखू — एहि फाइलमे अहाँ जकरा तकैत छी, ओ नाम नहि थिक। ओ निशान थिक। नाम बदलैत रहत। निशान वएह रहत।"

❖

नन्द पहिल पन्ना उठौलनि।

पन्नाक भीतर कोनो साँझ जीवित नहि छल, जेना खटाँसवला फाइलक पहिल पन्नामे एकटा जाड़क साँझ जीवित छल। एहिमे नहिये रक्त छल, ने धूलि, नहिये चीत्कार। एहिमे खाली संख्या छल — शान्त, सर्द, निर्जीव सन।

तैयो, ओहि संख्याकेँ पढ़ैत-पढ़ैत, नन्दकेँ लागल जेना पानिक तरसँ किछु हिलल — आस्तेसँ, बिनु कोनो आवाज केने। जेना बहुत नीचाँ, बहुत दूर, कोनो पैघ चीज अपन ठाम बदलने हो।

ओ आगाँ पढ़लनि।

आ दोसर पानिक कथा आरम्भ भेल — ओहि गाम सँ, जकर नाम एहि पूरा फाइलमे कतहु ठीकसँ लिखल नहि छल; आ ओहि बालक सँ, जकर असली नाम एहि फाइलमे बहुत बादमे आबऽवला छल।

अध्याय १ : नाम बिना जाल

खटाँसक मृत्युक बाद राजधानी नगर किछु बरख साँस लेलक।

बन्दूकक आवाज कम भेल। बजारक भय पातर भेल। जे लोक बरख भरि साँझ पड़िते घर घुसि जाइत छल, ओ फेर चौकपर ठाढ़ भऽ, बिना पाछाँ तकने, गप्प करऽ लागल। पान-दोकानपर हँसी घुरल। चाय-दोकानपर पुरान बहस घुरल। समाचार-पत्र लिखलक — नगरमे आब शान्ति अछि।

मुदा गोहि मरि कऽ पानि साफ नहि करैत अछि।

ओ खाली गहींरमे उतरि जाइत अछि। ऊपरसँ पानि थिर भऽ जाइत अछि, आ लोक बुझैत अछि जे आब कोनो गोहि नहि रहल। मुदा पानिक तर, बहुत नीचाँ, ओ अपन ठाम बदलैत रहैत अछि — चुपचाप, धैर्यसँ, अगिला भूखक प्रतीक्षामे।

❖

एहि बीच संसारे बदलि रहल छल।

नन्द आरुणि, जे फाइल पढ़ि रहल छलाह, ई परिवर्तन अपन आँखिसँ देखने रहथि, मुदा ओकर अर्थ नहि बुझने रहथि।

पहिने गाममे एक-दूटा घरमे तार-फोन रहैत छल — ओ पैघ लोकक निशानी छल। लोक ओहि घर लग जाइत छल, कातर भऽ प्रतीक्षा करैत छल, आ दूर शहरमे बैसल बेटासँ मिनट-दू मिनट बात कऽ, ओही मिनटकेँ बरख भरि मोन राखैत छल।

आब ओ तार टूटि गेल छल।

आब प्रत्येक हाथमे एकटा छोट, चमकैत यन्त्र आबि गेल छल। रिक्शावला लग, मजदूर लग, विद्यार्थी लग, ओहि युवक लग सेहो, जकरा दू बेराक भात नहि जुटैत छल। ओहि यन्त्रक भीतर पूरा संसार छल — आवाज, चित्र, अक्षर, आ ओ सभ, जकरा पहिने खाली पैघ लोक देखि सकैत छल।

आ ओही यन्त्रक संग एकटा दोसर परिवर्तन आयल, जकरा लोक तुरत्ते नहि बुझलक।

पहिने पाइ लोहाक तिजोरीमे राखल रहैत छल। ओकरा चोराबऽ लेल चोरकेँ घर घुसऽ पड़ैत छल, ताला तोड़ऽ पड़ैत छल, पकड़ल जेबाक खतरा उठाबऽ पड़ैत छल।

आब पाइ तिजोरीमे नहि रहल।

आब पाइ तार बिना, केवल संख्या बनि, एक यन्त्रसँ दोसर यन्त्र दिस उड़ऽ लागल। ओ आब वस्तु नहि रहल — ओ सूचना भऽ गेल। आ जे वस्तु सूचना भऽ जाइत अछि, ओकरा चोराबऽ लेल घर घुसबाक जरूरत नहि रहैत अछि। ओकरा चोराबऽ लेल केवल एकटा झूठ चाही, आ ओहि झूठकेँ हजारों कोस दूरसँ बजबाक एकटा यन्त्र।

बजार ओतबी रहल — ओही बाट, ओही दोकान, ओही भीड़। मुदा ओहि बजारक पाछाँ एकटा दोसर बजार बनि गेल छल। ओहि दोसर बजारमे ने दोकानक पट्टी छल, ने ग्राहकक भीड़, नहियेे माल। तैयो ओतय राति-दिन करोड़क लेन-देन होइत छल — चुपचाप, अदृश्य, बिना ककरो देखने।

आ ओहि दोसर बजारमे, सभसँ पहिने, छोट माछ आयल।

❖

कमला-बलानक चर-चाँचड़क ओ गाम सभ एहन छल, जतऽ नदी बरख-बरख अपन मन बदलैत रहैत छल।

एक बरख नदी दूर रहैत, आ गाम खेत-पथारसँ हरियर रहैत। दोसर बरख नदी सटि आबैत, आ पूरा इलाका पानिमे डूमि जाइत। घर कच्चा, बाट कच्चा, आ जीवन ओहिसँ बेसी कच्चा। जे बरख नीक होइत, ओहिमे पेट भरैत; जे बरख अधलाह, ओहिमे लोक शहर दिस भागैत।

ओहने एक गाममे ओ बालक जनमल छल, जकर नाम एहि फाइलमे बहुत बादमे आबऽवला छल।

ओकर पिता ईंटा-भट्ठापर मजदूरी करैत छलाह। ओ काज एहन छल, जे गाममे नहि भेटैत छल — तैँ ओ बरख भरि घरसँ दूर रहैत छलाह। एक बरख असम, एक बरख पंजाब, एक बरख कतहु आर। भट्ठाक आगिक लग, धुआँमे, ओ अपन जीवन जरबैत छलाह, आ बरखमे एक-दू बेर, थाकल-हारल, गाम घुरैत छलाह — किछु पाइ, किछु खोंखी, आ किछु नव चुप्पी लऽ कऽ।

ओकर माता दोसराक खेतमे रोपनी करैत छलीह।

जाड़क पानिमे, कादोमे घण्टों ठाढ़ भऽ, ओ धानक बीआ रोपैत छलीह — आ साँझ घर आबि, ओही हाथसँ बालककेँ भात परसैत छलीह, जे हाथ दिन भरि कादोमे रहल छल।

घरमे बिजली कहियो अबैत छल, कहियो नहि। जखन अबैत, तखन एकटा पीयर बल्ब कोठरीकेँ आधा-अन्हार-आधा-इजोत बना दैत छल। जखन नहि अबैत, तखन ढिबरी। बालककेँ दुनू मोन छल — आ दुनूसँ बेसी ओ मोन छल, जे ओहि इजोतमे ओ करैत छल।

❖

ओ बालक विद्यालय पसिन नहि करैत छल।

ओहिठाम ओकरा किछु नहि भेटैत छल — ने ओ अक्षर, जे ओकरा भूख मेटा सकय; ने ओ प्रश्न, जे ओकरा भीतर उठैत छल। मास्टर पढ़ाबैत, ओ खिड़कीसँ बाहर तकैत। मास्टर मारैत, ओ चुप रहैत।

मुदा ओकरा एकटा वस्तु पसिन छल — यन्त्र।

बन्द रेडियो, फूटल घड़ी, ककरो फेकल टॉर्च, ओ फोन जकर स्क्रीन टूटि गेल हो — ई सभ ओकरा लेल खिलौना छल। ओ ओकरा खोलैत, भीतरक तार देखैत, ओहि छोट-छोट अंग सभकेँ बुझैत, आ किछु दिनमे ओकरा फेर जीवित कऽ दैत।

गामक लोक कहैत — "ऐ बालकक हाथमे जादू अछि।"

एक बेर गामक एकटा बूढ़ीक रेडियो बहुत दिनसँ बन्द छल। ओ बालक ओकरा खोललक, भीतरक एकटा टूटल तार जोड़लक, आ रेडियो फेर बाजऽ लागल। बूढ़ी एतेक खुश भेलीह जे ओकरा किछु रूपा देलनि, आ ओकर माथ पर हथोड़िया देलन्हि — "बड़ नीक बेटा छह।"

ओहि क्षण बालक किछु अनुभव केलक, जकरा ओ ओहि उमेरमे नाम नहि दऽ सकल छल।

ओ ई नहि छल जे ओकरा पैसा भेटलै।

ओ ई छल जे — कियो ओकरा देखलक। कियो कहलक, तूँ छह, तूँ किछु छह।

मुदा जादू खेत नहि जोतैत अछि, आ पेट भात मांगैत अछि।

❖

तेरह बरखमे ओ शहर आयल।

पढ़बाक लेल नहि— काज करबाक लेल। ओकरा एकटा मोबाइल-दोकानपर काज भेटलै — दरमाहा कम, गारि बेसी। मालिक ओकरा बरतन-सफाइ, चाह आनब, दोकान झाड़ब सन काज दैत छल, आ जखन ओ यन्त्रकेँ छूबय, तखन डपटि दैत छल — "तोहर काज ई नहि। तूँ अपन काज कर।"

मुदा ओ बालक स्क्रीनक पाछाँ बैसि सभटा देखैत छल।

कोन तार कतऽ जाइत अछि, कोन बटन किएक अछि, मशीनमे कोन खरापी केना होइत अछि, केना ओ ठीक होइत अछि — ओ चुपचाप, दिन-प्रतिदिन, बिना ककरो कहने, सभटा सिखैत गेल। छअ मासमे ओ मालिकसँ बेसी नीक फोन मरम्मति करऽ लागल, बुझू जे फोन जियाबऽ लागल। ग्राहक अबैत छल, आ आब मालिककेँ छोड़ि सभ ओकरे खोजऽ लागल — "ओ छौड़ा कतऽ अछि? ओ बड़ नीक बनबैत अछि।"

ई मालिककेँ नीक नहि लागै।

एक दिन दोकानसँ किछु पाइ एम्हर-ओम्हर भऽ गेलै। ककरो नहि बूझल छलै जे कतऽ गेलै। मुदा मालिक ओहि बालकपर दोख लगौलक — बिनु प्रमाण, बिनु पूछ-पाछ। आ जाइत-जाइत, पूरा दोकानक सोझाँ, ओ ओ वाक्य कहलक, जे ओहि बालककेँ अन्तिम साँस धरि मोन रहल —

"तोहूँ ओहने छह, जेहेन तोहर बाप। मजदूरक बेटा मजदूरे रहत। चोरक जाति चोरे।"

बालक किछु नहि कहलक।

ओ दोकानसँ बाहर आयल, आ बाटपर बहुत देर ठाढ़ रहल।

ओहि क्षण ओकर भीतर किछु टूटल, आ किछु बनल।

जे टूटल, ओ ई विश्वास छल जे मेहनतिसँ कियो ओकरा देखत। जे बनल, ओ एकटा चुप, कारी प्रतिज्ञा छल — जे हम एहन किछु बनब, जकरा ई पूरा संसार देखय; आ जखन ओ हमरा देखय, तखन ओ पता नहि लगा सकय जे ई हम छी।

देखल जेबाक भूख, आ ओही संग नुकायल रहबाक भूख — ई दुनू ओहि क्षण एक संग ओकर भीतर जनमल।

आ ई दुनू भूख एक दिन ओकरा जलसमाधि धरि लऽ जाइ बला छल।

❖

ओ फेर गाम नहि गेल।

ओ शहरक ओहि अन्हरगर साइबर-कैफेमे बैसऽ लागल, जतऽ राति-राति भरि लोक अनचिन्हार नामसँ, अनचिन्हार काजसँ, स्क्रीनक सोझाँ बैसल रहैत छल। ओतऽ ककरो असली नाम नहि छल। ककरो असली मुँह नहि छल। सभ कियो खाली एकटा हस्ताक्षर छल, एकटा संख्या, एकटा छाह।

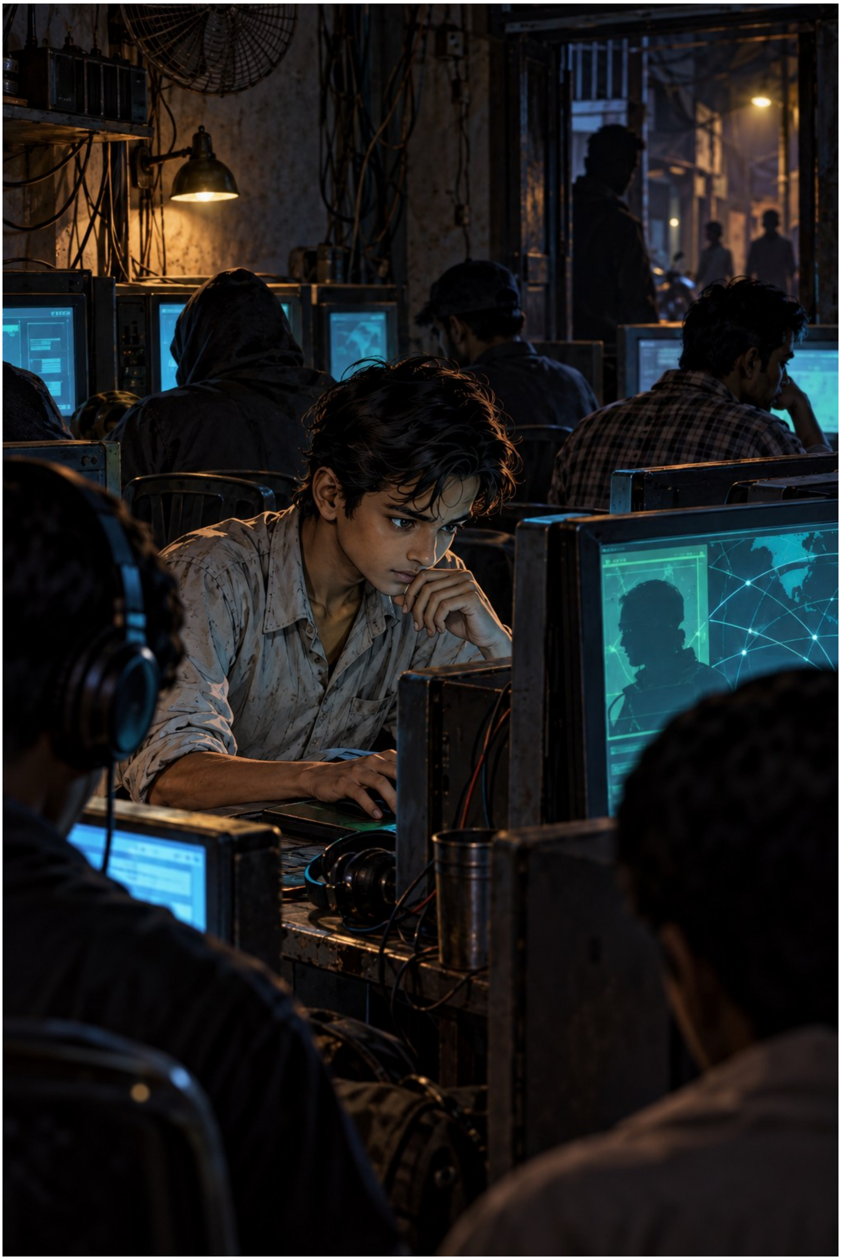

ओतय ओ पहिल बेर ओइ दोसर बजारकेँ देखलक।

ओ बजार, जतय पाइ शरीर बिना चलैत छल, आ आदमी नाम बिना। जतय कियो, बहुत दूर बैसल, ककरोसँ झूठ बाजि, ओकर जीवन भरिक जमा-पूँजी एक क्षणमे लऽ लैत छल — आ ककरो नहि बुझल होइत छल जे ई के केलक, कतऽ सँ केलक, किएक केलक।

बालक ओहि बजारकेँ बहुत देर तकैत रहल।

आ ओकरा बुझि पड़ल जे एहि पानिमे ओकर हाथक जादू खेतसँ बेसी काज देत। एहि पानिमे ओकरा ककरो देखबाक जरूरत नहि; ककरो सामने जेबाक जरूरत नहि; ककरो आगाँ अपन नाम कहबाक जरूरत नहि। ओ नाम बिना, चेहरा बिना, यएह रहि कऽ, किछु बनि सकैत छल, जकरा ई पूरा संसार महसूस करय।

ओ ओही राति बुझि गेल जे ओ कतऽ जाएत।

❖

आरम्भ छोट रहल।

फाइल एहि ठाम बहुत विस्तारसँ नहि लिखैत अछि — आ गोप कुमार कहितथि, ई नीक बात थिक; कारण जे तरीका बहुत विस्तारसँ लिखल जाइत अछि, ओ पढ़निहारकेँ सिखाबऽ लागैत अछि, आ स्मृति शिक्षक नहि, चेतावनी होयबाक चाही।

तेँ एतबे लिखल अछि —

पहिने ओ दोसराक झूठसँ आयल संख्याकेँ बुझब सिखलक। फेर एहन जाल बनाएब, जाहिमे लोक स्वयं अपन चाभी दऽ दैत अछि। फेर ओ बुझलक — एक्के आदमीक ठगीसँ पैघ किछु नहि होइए। पैघ ओ होइत अछि, जतय बहुत आदमी, एक संग, एक्के तरीका अपनाबैत अछि — आ ओहि सभ तरीकाक ऊपर, एक आदमी बैसि, सभसँ अपन हिस्सा लैत अछि।

ओ वएह एक आदमी बनऽ चाहलक।

❖

ओ गाम-गाममे पसरल छोट ठगकेँ ताकऽ लागल।

ओ छोट ठग सभ बेरोजगार छल, कर्जमे डूमल छल, हारल छल। ककरो ओ नीक तरीका सिखबैत; ककरो पुलिससँ बचबाक बाट बुझबैत; ककरो ओहि क्षण मदति करैत, जखन ओ फँसि जाइत। बदलामे ओ सभ ठगीक एकटा हिस्सा लैत छल।

ओ स्वयं कहियो ककरो घर नहि घुसैत छल। ओ स्वयं कहियो कोनो झूठ नहि बजैत छल। ओ खाली तरीका बेचैत छल — आ तरीका बेचनिहार कहियो पकड़मे नहि आबैत, कारण अपराध ओकर हाथसँ नहि, दोसरक हाथसँ होइत अछि।

एहि तरहेँ, आस्ते-आस्ते, दहोदिससँ आयल पानि एक धारमे बहऽ लागल।

पहिने जे छोट ठग सभ एक-दोसरसँ अनजान छल, ओ सभ आब, बिना एक-दोसरकेँ चिन्हने, एक्के आदमीक तरीकासँ बान्हल छल। आ ओहि धारक तरमे जे बैसल छल, ओकरा केओ देखने नहि छल।

ओ स्क्रीनपर अपन नाम कहियो नहि लिखलक।

ओ केवल एकटा हस्ताक्षर छोड़ैत छल, चौड़गर आँखिर सन —कूटशब्द तरहड़ि मे गोहि-तलगोहि। पानिक सभसँ नीचाँवला गोहि, जे ऊपरसँ कहियो नहि देखाइत, मुदा जकर आस्तेसँ हिललोपर पूरा पोखरि थरथराइत अछि।

गामक ओ भूखल बालक आब कतहु नहि छल।

जे मजदूरक बेटा छल, जकरा दोकानदार कहने रहैक जे चोरक बेटा चोर — ओ मजदूरक बेटा आब कतहु नहि छल। ओकर बदला ओ नाम आबि गेल छल, जकर कोनो चेहरा नहि छल — खाली पानिक हिलब छल।

ओ अपन नाम मेटा देने छल।

आ ओकरा नहि बूझल छल जे जे आदमी अपन नाम मेटा दैत अछि, ओ अपन भीतर एकटा एहन भूख छोड़ि दैत अछि, जे अन्तमे ओकरा किनार धरि, आ किनारसँ पानिक तह धरि, घीचि लऽ जाइत अछि।

❖

नन्द आरुणि पहिल अध्याय बन्द केलनि।

बाहर चन्ना गाछी चुप छल। पीपरक पात थरथराइ छल।

"गोप बाबू," ओ आस्तेसँ कहलनि, "ई बालक हमरा डरबैत अछि। खटाँससँ बेसी।"

"किएक?" गोप कुमार पुछलनि।

"किएक तँ खटाँसकेँ हम बुझैत छलहुँ। ओ भयसँ राज करैत छल; भयकेँ हम देखि सकैत छलहुँ। मुदा एहि बालककेँ हम बुझैत नहि छी। ओ भयसँ नहि, अदृश्यतासँ राज करैत अछि। आ जकरा देखल नहि जा सकैत अछि, ओकरासँ डेराएब सभसँ कठिन अछि।"

गोप कुमार बहुत देर चुप रहलाह।

फेर ओ केवल एतबा कहलनि — "एही लेल हम अहाँकेँ ई फाइल देलहुँ, नन्द बाबू। जकरा हम बुझैत छी, ओकरासँ हम बचि सकैत छी। जकरा हम नहि बुझैत छी, ओ हमरा बेर-बेर छलैत रहत। एहि बालककेँ बुझू — ओकर नाम नहि, ओकर भूख। कारण वएह भूख, अन्तमे, ओकर सभसँ पैघ शत्रु बनल।"

नन्द अगिला पन्ना दिस हाथ बढ़ौलनि।

ओहि पन्नाक ऊपर लिखल छल — "विशेष कार्यदल फेर जागल।"

अध्याय २ : कार्यदलक नव पानि

विशेष कार्यदल खटाँसवला बरखक बाद ओही रूपमे नहि रहल छल।

ओहि बरख विशेष कार्यदल एकटा होटलक कोठरीमे बनल छल — जल्दीमे, आवश्यकतामे, बिना कोनो स्थायी ठेकानाक। ओहि समय ओकरा लग ने पैघ दफ्तर छल, ने नक्शा, नहिये यन्त्र। ओकरा लग खाली किछु थाकल अधिकारी छल, किछु फोनक तार छल, आ एकटा जिद्द — जे एहि बेर गोहि पानिमे नहि, किनारपर पकड़ल जाएत।

आ ओ जिद्द जीतल छल।

आ जीतक बाद, सरकार ओहि दलकेँ भंग नहि केलक — ओकरा संस्था बना देलक। आब ओकर लग एकटा साफ दफ्तर छल; दीवारपर जिलाक नक्शा; मेजपर संगणक; आ ओ लोक, जे खटाँसकेँ पकड़ने रहथि, आब नव अधिकारीकेँ ओ विद्या सिखबैत छलाह, जे हुनका ओहि पुरान शिकारसँ भेटल छल।

ओ विद्या हथियारक नहि छल।

ओ विद्या ई छल — सूचना बाँटब; जिला-सीमाकेँ पार कऽ समन्वय करब; तकनीकक संकेतकेँ जमीनपर जाँचब; आ एक्के लक्ष्यपर, मासक-मास, बिना थकने, संस्थागत ध्यान राखब।

खटाँस गोलीसँ नहि मरल छल। ओ एहि धैर्यसँ मरल छल।

❖

अरुणेश मिश्र आब पहिनेसँ बेसी चुप रहऽ लागल छलाह।

खटाँसवला बरख हुनकर केशकेँ पका देने छल। हुनकर आवाज ओतबे थिर रहल, मुदा ओहिमे आब एकटा थकान सेहो छल — ओ थकान, जे बहुत बरख धरि दोसराक भय अपन कान्हपर उठौलाक बाद अबैत अछि।

मुदा एकटा बात नहि बदलल छल।

ओ आइयो, सभ नव अधिकारीकेँ, पहिल दिन ई बात कहैत छलाह — "अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू।"

नव लोक ई बात सुनैत, आ मूड़ी हिलबैत, मुदा बुझैत नहि छल। ओकरा बुझऽ लेल एकटा एहन शिकार चाही, जाहिमे अनुमान बहुत होय, आ प्रमाण एको नहि — आ ओहि अनुमानपर हाथ राखबाक ओ नोचनी, जकरा रोकब सभसँ कठिन अछि।

❖

अभयकान्त झा आब उपनिरीक्षक नहि रहलाह।

मुदा हुनकर काज लगभग वएह रहल — आवाज सुनब आ स्थान बुझब। खटाँसवला बरख ओ फोनक आवाजसँ आदमीक ठाम ताकैत छलाह; कोन नम्बर ककरा फोन केलक, कोन आवाज कतऽसँ आयल — ई हुनकर पुरान विद्या छल।

मुदा एहि बरख हुनका किछु आर सीखऽ पड़ल छल।

आब ओ केवल आवाज नहि, चुप्पी सेहो सुनब सीखि गेल छलाह। कोन नम्बर अचानक बाजब बन्द भऽ गेल; कोन आदमी, जे रोज फोन करैत छल, दू दिनसँ गायब अछि; कोन

बैंक-खाता, जे बरख भरि सूतल रहल, अचानक जागल — एहि सभ चुप्पीक अपन भाषा होइत छल, आ अभयकान्त ओ भाषा पढ़ऽ लागल छलाह।

फेर एकटा दिन एहन आयल, जखन आवाज आ चुप्पी, दुनू, हुनकासँ आगाँ निकलि गेल।

एकटा अपराध एहन आयल, जाहिमे कोनो फोन नहि छल। कोनो आवाज नहि। एहन अपराध, जे केवल स्क्रीनक भीतर, संख्याक भीतर, कतहु बहुत दूर घटित भेल छल — आ अभयकान्त झा, जे बरख भरि आवाज पढ़ैत आयल छलाह, ओहि चुप स्क्रीनक सामने पहिल बेर असहाय भऽ ठाढ़ छलाह।

ई नव पानि छल।

आ एहि पानिमे हुनकर पुरान जाल छोट पड़ि रहल छल।

❖

नव पानिक लेल नव आँखि चाही छल।

सुनयना ठाकुर ओहि दिन कार्यदलमे आयल छलीह।

ओ ओहि पीढ़ीक छलीह, जे बन्दूकसँ पहिने संगणक चिन्हने छल। ओ थानाक ओहि पुरान संस्कृतिमे नहि पलल छलीह, जाहिमे बल पहिल भाषा होइत छल। ओकर लेल पहिल भाषा सूचना छल — संख्या, संकेत, ओ छोट-छोट निशान, जे मनुष्य बिना बुझने अपन पाछाँ छोड़ि दैत अछि।

पहिल दिन, जखन ओ ओहि दफ्तरमे अयलीह, तखन पुरान अधिकारी सभ हुनका दिस एना देखलनि, जेना कोनो अनचिन्हार यन्त्र दिस देखल जाइत अछि — जकर उपयोग नहि बूझल हो।

एकटा पुरान अधिकारी हँसैत कहलनि — "बेटी, ई काज कागच आ बन्दूकक थिक। एतऽ स्क्रीनसँ किछु नहि होइत अछि।"

सुनयना किछु नहि कहलनि।

ओ केवल ओहि मेजपर बैसलीह, जकरापर सैकड़ो शिकाइतक पन्ना पड़ल छल — एहन शिकाइत, जकरा कोनो थाना गम्भीरतासँ नहि लेने छल, कारण सभटा शिकाइत सभ बहुत छोट छल। ककरो पाँच हजार गेल; ककरो दस। पुलिस लेल ई माछ एतेक छोट छल जे जाल फेकबो व्यर्थ बुझाइत छल।

सुनयना ओहि पन्ना सभकेँ तीन राति पढ़लनि।

आ चारिम दिन ओ अभयकान्त झा लग गेलीह।

❖

"सर," ओ कहलनि, "ई सभ शिकाइत अलग थिक। अलग नाम, अलग गाम, अलग रकम। मुदा एकरा भीतर किछु एक्के अछि।"

अभयकान्त पन्ना दिस देखलनि। हुनका किछु नहि बुझेलनि।

"की एक्के अछि?"

"तरीका, सर।" सुनयना एकटा पन्ना उठौलनि। "देखू — एहि सभमे एक्के ढंगक झूठ बाजल गेल अछि। एक्के ढंगक जाल बनाओल गेल अछि। जेना बहुत लोक एक्के शिक्षकसँ लिखब सिखने हो — आ सभक हस्ताक्षरमे वएह एक्के मोड़ रहि गेल हो।"

अभयकान्त बहुत देर चुप रहलाह।

फेर ओ वएह बात कहलनि, जे खटाँसवला बरख हुनका सिखौने रहैक — "तूँ एकरा गिट्ठऽ कहऽ। बहुत तार अलग-अलग जाइत अछि। मुदा कतहु-ने-कतहु ओ सभ एक्के गिट्ठऽ मे बान्हल अछि। ओही गिट्ठऽ धरि पहुँचब हमर काज।"

"आ हम एकटा बात आर कहब, सर," सुनयना कहलनि, आ हुनकर स्वरमे एकटा एहन निश्चय छल, जे ओहि उमेरमे कम भेटैत अछि। "ई लोक सभ अपन नाम नहि नुकबैत अछि। ई अपन तरीका नुकबैत अछि। हम जँ नामक पाछाँ दौगब, तँ ई नाम बदलि लेत, आ हम खाली हाथ रहि जाएब। मुदा तरीका आदमीक आदति होइत अछि। आ आदति— आदति नुकाएब सभसँ कठिन अछि।"

अभयकान्त झा ओहि युवतीकेँ बहुत देर तकैत रहलाह।

फेर ओ पहिल बेर आस्तेसँ मुस्कुरेलाह।

"अरुणेश बाबू," ओ पाछाँ घुरि कहलनि, "एहि बेर हमरा ओ आँखि भेटि गेल, जे हमरा लग नहि छल।"

❖

अरुणेश मिश्र कोनमे बैसल सभटा सुनैत रहलाह।

ओ उठला, मेज लग आबि ओहि पन्ना सभकेँ देखलनि। फेर ओ खाली एतबा कहलनि — "गिट्ठऽ नीक बात थिक। तरीका नीक बात थिक। मुदा ई दुनू अखनहुँ अनुमान थिक। अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू। पहिने एकटा तार पकड़ू, जकर दोसर छोर कोनो जीवित आदमी हो। तखन हम आगाँ बढ़ब।"

एहि तरहेँ, ओहि दिन, कार्यदल एकटा नव काज शुरू केलक।

ओ नाम-सूची बन्द केलक। ओ तरीका-सूची खोललक।

कोन ठगीमे एक्के शब्द बाजल गेल? कोन जाल एक्के गलतीसँ बनाओल गेल? कोन पाइ, अन्तमे, एक्के ढंगसँ गायब भेल?

आ धीरे-धीरे, सयकड़ो बिखरल शिकायतक भीतरसँ, एकटा आकृति उठऽ लागल — जेना अन्हार पानिमे, बहुत नीचाँ, किछु पैघ हिलल हो।

आ ओहि आकृतिक ऊपर, बेर-बेर, ओ एक्के हस्ताक्षर भेटैत छल, जकरा केओ बुझि नहि पबैत छल —

तलगोहि।

❖

नन्द आरुणि पन्ना बन्द केलनि।

"गोप बाबू, ई अजीब बात थिक। खटाँसकेँ पकड़बाक लेल बन्दूक चाही छल। एकरा पकड़बाक लेल — एकटा युवती, जे स्क्रीन पढ़ैत अछि।"

गोप कुमार धीरे कहलनि — "हरेक पानिक अपन शिकारी होइत अछि, नन्द बाबू। पहिल पानिमे शिकारी ओ छल, जे आवाज पढ़ैत छल। एहि पानिमे शिकारी ओ थिक, जे निशान पढ़ैत अछि। अभयकान्त पुरान माटि जनैत छथि; सुनयना नव पानि। दुनू एक संग नहि रहितथि, तँ ई गोहि कहियो नहि पकड़ाइत।"

ओ खिड़की दिस देखलनि।

"आ ई बात मोन राखू — जे दिन एकटा समाज बूझि जाइत अछि जे अपराध केवल नाम नहि, तरीका सेहो होइत अछि, ओहि दिन ओ समाज पहिल बेर सचमुच सयान होइत अछि।"

अध्याय ३ : दू पानिक संगम

तलगोहिक लग आब पाइ छल।

मुदा ओ पाइ अजीब किसिमक छल।

ओ स्क्रीनक भीतर छल — केवल संख्या बनि। ओ पाइ ओकर छल, मुदा ओ ओकरा छूबि नहि सकैत छल। ओकरा आँगुरसँ गनि नहि सकैत छल। ओहिसँ माएकेँ किछु पठा नहि सकैत छल; ओहिसँ अपन लेल घर बना नहि सकैत छल; ओहिसँ बजारमे एकटा गमछा तक कीनि नहि सकैत छल।

संख्या जाबत संख्या रहैत अछि, ताबत ओ केवल संख्या रहैत अछि। ओहिसँ पेट नहि भरैत।

तलगोहि पहिल बेर ओहि दीवारसँ टकरायल, जकरा हरेक नव अपराधी देर-सबेर टकराइत अछि — चोरी सोझ, मुदा चोरीक फलकेँ अपन जीवनमे आनब कठिन।

ओकरा ओ संख्या फेर माटिपर आनऽ पड़ैत छल। ओकरा पानिसँ बाहर, नोटमे, ईंटामे, जमीनमे बदलऽ पड़ैत छल।

आ ई ओ काज छल, जे ओ अकेले नहि कऽ सकैत छल।

❖

बिरजू साह पुरान पानिक आदमी छलाह।

खटाँसवला बरखमे ओ कहियो चेहरा नहि रहथि। ओ ओहि लोकमे रहथि, जकरा अखबार कहियो नहि छापैत, जकर चित्र कहियो पहिल पन्नापर नहि अबैत। गोली दोसर चलबैत छल; लाश दोसर गिरैत छल; भय दोसर बेचैत छल। बिरजू केवल एकटा काज करैत छलाह — पाइकेँ साफ करब।

रेल-निविदाक कारी पाइ, भयक कारी पाइ, इनाम-पर्चीक कारी पाइ — जे कारी छल, ओकरा उज्जर बनाएब बिरजूक विद्या छल।

ओ कहैत छलाह — "हम कागचकेँ राख बनाबैत छी, आ राखकेँ फेर कागच। बीचमे जे नाम जरैत अछि, ओ याद ककरो नहि रहैत। हम पाइक धोबी छी, बेटा। धोबी कपड़ाक मालिक नहि होइत — मुदा हरेक कपड़ाक दाग जनैत अछि।"

खटाँस मरल, तँ ओ धार सुखा गेल।

बिरजू बूढ़ भऽ रहल छलाह। नव पानि हुनका बुझाइत नहि छल। ओ अखबारमे पढ़ैत छलाह जे आब लोक फोनसँ पाइ चोराबैत अछि, आ माथ धुनैत छलाह — "ई कोन चोरी थिक, जाहिमे हाथ नहि, पिस्तौल नहि, दरबज्जा नहि — केवल संख्या? ई हमरा बुझमे नहि अबैत। हमर समय बीति गेल।"

❖

तलगोहिकेँ बिरजू चाही छल।

आ बिरजूकेँ, यद्यपि ओ एखन धरि नहि जनैत छलाह, तलगोहिक नव धार चाही छल।

दुनूक भेट कोनो अड्डापर नहि भेल। कोनो चाय-दोकानपर नहि, कोनो गोपन कोठरीमे नहि। तलगोहि कतहु सामने नहि अबैत छल — ई ओकर पहिल नियम छल।

ओ केवल एकटा संदेश पठौलक। पुरान पानिक आदमी लग, नव पानिक प्रस्ताव।

बिरजू पहिने ओहि संदेशपर हँसलाह। एकटा अनचिन्ह आदमी, बिना नामक, हुनका ओ काज करबाक कहि रहल छल, जे ओ बरख पहिने छोड़ि देने रहथि।

फेर ओ सोचलाह।

फेर हुनकर हँसब बन्द भेल।

कारण संख्या, जे ओहि अनचिन्ह आदमी देखौलक, ओ खटाँसक सभ बरखक इनाम-पर्चीसँ पैघ छल। बिरजू अपन पूरा जीवनमे एतेक पाइ एक ठाम नहि देखने रहथि। आ ओ पाइ कोनो गोलीसँ नहि आयल छल; कोनो लाश ओकर पछाँ नहि छल; कोनो भय ओकरा नहि जोगने छल। ओ केवल संख्या छल — चुप, अदृश्य, अनन्त।

"ठीक," बिरजू अन्तमे कहलनि। "तूँ पानिमे झूठ पकड़ैत छह; हम ओहि झूठकेँ माटिपर साँच बनाएब। तूँ पानिक तर रह; हम किनारक काज सम्हारब। मुदा एकटा शर्त — तूँ कहियो हमरा सामने नहि आबिहऽ। जे नाम नहि देखाइत, ओ पकड़ल नहि जाइत। हम खटाँसक बरख एही एक बातसँ बचल रहलहुँ।"

"हमर तँ नामे नहि अछि, बिरजू बाबू," तलगोहि जवाब देलक।

बिरजू ओहि दिन बुझलाह जे ओ ककरा संग जुड़ि रहल छथि।

आ पहिल बेर, अपन पूरा जीवनमे, बूढ़ पानिक आदमीकेँ किछु डर सन लागल — कारण ओ बहुत अपराधी देखने रहथि, मुदा एहन आदमी नहि, जकर नामे नहि हो।

❖

एहि तरहेँ दू पानिक संगम भेल।

पुरान अपराधक धार — तेन्दर, हवाला, भयक पाइ, ओ पुरान बाट, जे कारी पाइकेँ उज्जर बनबैत छल — आ नव अपराधक धार — संख्या, स्क्रीन, नाम बिनाक ठगी — ई दुनू एक ठाम मिलल।

ऊपरसँ कमला-बलान ओतबी शान्त रहल।

मुदा पानिक तर आब दूटा गोहि छल। एकटा बूढ़, जे रस्ता जनैत छल — मुदा ओ रस्ता डूबबसँ बचबाक रस्ता छल। एकटा नव, जे रस्ता बनबैत छल — मुदा ओ रस्ता, बिना ककरो बुझने, किनार दिस जाइत छल।

❖

तलगोहि अपन काज बढ़ौलक।

ओ आब केवल छोट ठगकेँ नहि जोड़ैत छल। ओ जिलाभरिक ठगीक ऊपर एकटा अदृश्य "कर" बैसा देने छल।

जे ओकर तरीका अपनाबैत, ओकरा हिस्सा जाइत। जे हिस्सा नहि दैत, ओकर तरीका अचानक "फूटि" जाइत — पुलिस लग ठीक ओकरे सूचना पहुँचि जाइत, आ ओ पकड़ल जाइत। ककरो नहि बुझल होइत छल जे ओ सूचना कतऽसँ आयल।

धीरे-धीरे, ओहि अदृश्य बजारमे, एकटा नियम बनि गेल —

जे तलगोहिक संग अछि, ओ सुरक्षित अछि। जे तलगोहिक विरुद्ध अछि, ओ पकड़ल जाएत।

लोक बुझऽ लागल — पानिमे कियो अछि, जे सभटा देखैत अछि। जे हरेक सौदा जनैत अछि, हरेक झूठ जनैत अछि, हरेक आदमीकेँ ओकर कमजोरीसँ चिन्हैत अछि।

मुदा ओ के — से केओ नहि जनैत छल।

आ यएह ओकर सभसँ पैघ शक्ति छल। कारण भयकेँ लोक देखि सकैत अछि, आ जकरा देखल जा सकैत अछि, ओकरा लड़लो जा सकैत अछि। मुदा अदृश्यताकेँ केवल विश्वास कएल जा सकैत अछि — आ जे राज विश्वासपर चलैत अछि, ओ सभसँ गहिर होइत अछि।

❖

नन्द आरुणि पन्ना पढ़ि रुकलाह।

"गोप बाबू, ई अजीब मेल थिक। एकटा बूढ़, जे खटाँसक बरखसँ बचल रहल; आ एकटा नव, जकरा खटाँस कहियो देखनहुँ नहि होयत। दुनू एक संग।"

गोप कुमार धीरे मूड़ी हिलौलनि।

"एही लेल हम कहने रही, नन्द बाबू — गोहि व्यक्ति सेहो होइत अछि, जाल सेहो। खटाँस व्यक्ति छल; ओ मरल। बिरजूक बाट जाल छल; ओ नहि मरल। जाल जीवित रहल, तँ ओहिपर एकटा नव गोहि बैसि गेल।"

ओ किछु क्षण चुप रहलाह।

"मुदा एहिमे एकटा बात हमरा नीक लगैत अछि, नन्द बाबू। जे बूढ़ बाट जीवित रहल, ओ नव गोहिकेँ पकड़बाक रस्ता सेहो जीवित रखलक। बिरजू बिना, ई नव गोहि पानिमे अजेय रहैत। मुदा बिरजूक संग ओ माटिसँ जुड़ल — आ जे माटिसँ जुड़ल, ओ पकड़ल जा सकैत अछि।"

बाहर पीपरक पात काँपल।

"नीक आ अधलाह, नन्द बाबू, दुनू एक्के स्मृतिमे बान्हल रहैत अछि। जे जाल अपराधकेँ जियबैत अछि, ओही जालक भीतर, कतहु, ओकर मृत्युक बीआ सेहो लुकल रहैत अछि।"

अध्याय ४ : पहिल गिट्ठऽ

सुनयना ठाकुर तीन राति सँ ओही पन्ना दिस तकैत रहलीह।

दफ्तरक बाकी लोक साँझ पड़िते घर चलि जाइत छल; ओ रहि जाइत छलीह — स्क्रीनक हलुक इजोतमे, सयकड़ो शिकायतक बीच। ओकर आँखि लाल भऽ गेल छल, मुदा ओ उठऽ नहि चाहैत छलीह। कारण ओकरा लागैत छल जे ओ किछुक बहुत लग अछि — एहन किछुक, जकरा बाकी सभ अनठा देने छल, कारण ओ बहुत छोट छल।

सयकड़ो शिकायत। अलग नाम, अलग गाम, अलग रकम। ककरो पाँच हजार, ककरो दस। हरेक अलग थानामे दर्ज, हरेक अलग तारीखमे। एतेक बिखरल जे कियो जोड़ि कऽ नहि देखलक।

मुदा ओकरा भीतर किछु एक्के छल।

एकटा छोट, दोहरायल गलती। एहन छोट, जे केओ ध्यान नहि देलक। जेना बहुत लोक एक्के शिक्षकसँ लिखब सिखने हो, आ सभक हस्ताक्षरमे ओही एक्के मोड़ रहि गेल हो। ओ मोड़ अपराधीक नहि छल — ओ ओहि तरीकाक छल, जे ओकरा ककरो सिखौने छल।

सुनयना ओहि मोड़केँ पकड़लनि।

❖

ओ अभयकान्त झा लग गेलीह।

"सर," ओ कहलनि, हुनकर आवाजमे तीन रातिक थकान आ एकटा नव उत्साह, दुनू छल, "ई सभ अलग आदमी थिक। मुदा तरीका एक्के अछि। आ तरीका ककरो सिखाओल अछि। जे सिखौलक, ओ एतय नहि अछि — मुदा ओकर हाथ हरेक ठगीमे अछि।"

अभयकान्त बहुत देर पन्ना तकैत रहलाह।

फेर ओ कहलनि — "बहुत तार अलग-अलग जाइत अछि, सुनयना। मुदा कतहु-न-कतहु ओ सभ एक्के गिट्ठऽमे बान्हल अछि। ई सभ छोट ठग ओहि गिट्ठऽक तार थिक। हमरा तार नहि, गिट्ठऽ चाही।"

अरुणेश मिश्र, जे कोनमे बैसल सभटा सुनैत रहलाह, उठि अयला।

ओ पन्ना देखलनि। फेर ओ केवल एतबे कहलनि — "गिट्ठऽ नीक बात थिक। मुदा गिट्ठऽ अखनहुँ अनुमान थिक। अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू। तूँ ऊपरसँ गिट्ठऽ धरि नहि पहुँचि सकैत छह। तोरा नीचाँसँ शुरू करऽ पड़तऽ — एकटा एहन तार पकड़ऽ पड़तऽ, जकर दोसर छोर कोनो जीवित आदमी हो। सभसँ छोट तार। सभसँ छोट माछ।"

❖

ओ माछ बहुत छोट छल।

नाम — मनोज। राजधानी नगरक किनारक एकटा युवक। नहि पढ़ले, नहिये कमाइत। पिता बीमार, बहिनक बियाहक कर्ज, आ घरमे सभ दिन ओ प्रश्न, जकर उत्तर ओकरा लग नहि छल — "आइ भात केना बनत?"

ओहने समयमे कियो ओकरा कहने रहैक — "अपन बैंक खाता किछु दिन लेल भाड़ापर दऽ दे। ओहिमे पाइ एतै-जेतै। तोरा किछु नहि करऽ पड़तऽ — बस खाता तोहर नामे रहतऽ। सभ बेर तोरा हिस्सा भेटतऽ।"

मनोज मानि गेल।

ओकरा नहि बूझल छल जे जे पाइ ओकर खातासँ बहि रहल छल, ओ ककरो जीवन भरिक जमा कएल धन छल — कोनो बूढ़ीक पेंशन, कोनो किसानक बीआक पाइ, कोनो एहन आदमीक बचत, जे ओकरा सन गरीब छल। ओकरा एतबे बूझल छलै जे ओकर खातामे पाइ आबैत अछि, आ ओकरा किछु टाका भेटैत अछि। भूखल आदमीकेँ ओहिसँ बेसी किछु नहि बुझल होइत छै।

पुलिस जखन ओकरा धएलक, ओ थरथराय लागल।

❖

सामान्य नियम छल — पकड़ू, कागच बनाऊ, जेलमे राखू।

एहन शिकार पहिनहुँ पकड़ल गेल छल। छोट माछ पकड़ाइत छल, कागच बनैत छल, ओ जेल जाइत छल, आ गोहि पानिमे ओतबे सुरक्षित रहि जाइत छल।

मुदा अभयकान्त झा ओहि युवककेँ जेल नहि, एक कप चाह देलनि।

मनोज कातर भऽ चाह दिस देखलक — जेना ई कोनो जाल हो।

"पी," अभयकान्त आस्तेसँ कहलनि। "जाड़ अछि।"

युवक चाह पीलक। ओकर हाथ थरथड़ाइत रहलै।

"तोहर कोनो दोष नहि, ई हम नहि कहब," अभयकान्त कहलनि। "तूँ खाता देलह, ई गलत केलह। मुदा तूँ जकर पाइ चोरेलह, ओकरा तूँ कहियो नहि देखलह, आ जे तोरा एहिमे लगौलक, ओकरा तूँ नहि चिन्हैत छह। तूँ छोट माछ छह, मनोज। आ हमरा छोट माछ नहि चाही।"

मनोज मूड़ी उठौलक।

"हमरा ओ गोहि चाही," अभयकान्त आगाँ बढ़लाह, "जे तोरा जकाँ सैकड़ो छोट माछकेँ खा रहल अछि। जे तोरा एहि जालमे फँसौलक, ओ तोरा जकाँ हजारकेँ फँसौने अछि। तूँ ओकरा नहि चिन्हैत छह — जानैत छी। तोरा ओकर नाम नहि बूझल — मुदा ओ तोरा तक केना पहुँचल, ओ रस्ता तोरा मोन छह?"

मनोज बहुत काल धरि चुप रहल।

ओकर भीतर दू डर आपसेमे लड़ि रहल छल — पुलिसक डर, आ ओहि अनचिन्हल आदमीक डर, जे ओकरा फँसौने रहैक। मुदा ओहि क्षण, ओहि चाहक गरमीमे, एकटा तेसर बात सेहो जागल — ओ पहिल बेर बुझलक जे ओ स्वयं ककरो शिकार छल।

आ शिकार, जखन ई बुझि जाइत अछि जे ओ शिकार अछि, तखन ओ बाजऽ लागैत अछि।

ओ ओ रस्ता कहलक — कोन नाम, कोन मंच, कोन शब्द ओकरा तक आयल छल।

❖

आ ओहि रस्ताक सभसँ अन्तमे, वएह एक्के हस्ताक्षर छल — जकरा मनोज कहियो बुझि नहि पेने छल जे ओ की अछि — कूट शब्द- तरहड़िमे गोहि: तलगोहि।

❖

पहिल बेर कार्यदलक लग एकटा नाम छल।

नाम, जे नाम नहि छल। चेहरा, जे चेहरा नहि छल। खाली एकटा हस्ताक्षर, आ ओकर तरीकाक छाप।

सुनयना ओहि साँझ बहुत उत्साहित छलीह। "सर, आब हमरा लग सूत्र अछि! एकटा नाम, एकटा मंच, एकटा दिशा!"

अभयकान्त हँसलाह — ओहि थाकल, सोझ हँसीसँ, जे खटाँसवला बरखमे सिखने रहथि।

"सूत्र अछि, सुनयना। मुदा एकटा बात मोन राखू — गोहि सूत्रसँ नहि पकड़ाइत अछि। गोहि पानिक भीतर सभसँ बलगर अछि। ओ तखने पकड़ाइत अछि, जखन ओ स्वयं एकटा गलती करैत अछि। हमर काज सूत्र जमा करब नहि — हमर काज ओहि गलतीक प्रतीक्षा करब अछि। आ ओहि क्षण लेल तैयार रहब, जखन ओ गलती होय।"

सुनयनाक उत्साह कने थिर भेल। ओ बुझलनि जे शिकार ओतबा सोझ नहि, जतबा ओ सोचने रहथि।

"मुदा एकटा बात नीक अछि, सर," ओ अन्तमे कहलनि। "पहिल बेर, ओ जनैत नहि अछि जे हम ओकरा जनैत छी। ई हमर लाभ थिक।"

अभयकान्त मूड़ी हिलौलनि।

"हँ। जाबत गोहि बुझैत अछि जे ओ अदृश्य अछि, ताबत ओ लापरवाह रहैत अछि। हमर काज ओकरा ओतबे दिन अदृश्य बुझऽ देब अछि — जाबत हम ठीक ओकर पाछाँ नहि पहुँचि जाइ।"

❖

नन्द आरुणि पन्ना बन्द केलनि।

बाहर कमला-बलानक पानि थिर छल।

"गोप बाबू," ओ आस्तेसँ कहलनि, "एकटा भूखल छौड़ा जे अपन खाता भाड़ापर देने रहैक — ओ पूरा जालक पहिल गिट्ठऽ बनल।"

गोप कुमार आस्तेसँ कहलनि — "एही लेल, नन्द बाबू, कोनो जाल केवल पैघ लोकसँ नहि बनैत अछि। ओ छोट-छोट भूखल लोकसँ बनैत अछि, जे बुझितो नहि अछि जे ओ जालक हिस्सा अछि। आ जखन जाल टूटैत अछि, तखन सेहो ओ ओही छोट लोकसँ टूटैत अछि — कारण छोट माछकेँ ओहि गोहि तक जेबाक रस्ता जनैत अछि, जे ओकरा खाइत अछि।"

ओ पन्ना उनटौलनि।

"अभयकान्त ठीक कहलनि — गोहि सूत्रसँ नहि पकड़ायत। मुदा एकटा बात ओहो नहि कहलनि, नन्द बाबू, जकरा हम कहब — गोहि अपन सभसँ पैघ गलती तखन करैत अछि, जखन ओ बुझऽ लागैत अछि जे ओ कहियो नहि पकड़ायत। आ ई गोहि, अखन, ठीक ओही दिशामे बढ़ि रहल अछि।"

अध्याय ५ : नाम बदलल, निशान बचल

तलगोहिकेँ गरमीक अनुभव भेल।

ओ केना बुझलक, ई ओ स्वयं नहि कहि सकैत छल। ओकरा लग कोनो प्रमाण नहि छल, कोनो सूचना नहि। मुदा जे आदमी बरख भरि पानिक भीतर रहैत अछि, ओ पानिक हलुक्को बदलावकेँ चर्मसँ बुझि लैत अछि।

एकटा मंच, जतऽ किछु लोक सभ दिन बजैत छल, अचानक चुप भऽ गेल।

एकटा पुरान साथी, जे सभ दिन जवाब दैत छल, दू दिन जवाब नहि देलक।

आ एकटा छोट माछ — ओ मनोज, जकर खाता ओ चलबैत छल — अचानक गायब भऽ गेल। ने ओकर खाता बजैत छल- कोनो पाइ ने ओइमे आबै छल ने जाइ छल- नहियेओकर फोन आब रिंग होइत छल।

तलगोहि एहि छोट-छोट चुप्पीकेँ जोड़लक।

आ ओकरा भीतर ओ पुरान संकेत जागल, जे सभ शिकारकेँ ओहि क्षण जगबैत अछि, जखन ओ पहिल बेर बुझैत अछि जे कियो ओकरा तकैत अछि —

पानि हिलि रहल अछि।

❖

बिरजू साह फोनपर खाली एतबा कहलनि — "पानि हिलि रहल अछि, बेटा। हमरा एकर गन्ध बहुत बरखसँ आबैत अछि। किछु दिन डूबल रह। ऊपर आबऽ जुनि। जे नाम नहि देखाइत, ओ पकड़ल नहि जाइत अछि— मुदा जे नाम बेसी देखाइत अछि, ओ सभसँ पहिने पकड़ाइत अछि।"

"हमर नाम तँ केओ नहि जनैए, बिरजू बाबू," तलगोहि कहलक।

"जनैत अछि," बिरजू आस्तेसँ कहलनि। "तूँ बुझैत नहि छह, मुदा ओ जनैत छह। जखन पानि हिलैत अछि, तखन ई मानि लेब जे किनार लग कियो ठाढ़ अछि। हम खटाँसकेँ देखने छी, बेटा। ओ सोचैत छल जे ओकरा केओ नहि पकड़ि सकैत अछि। ई सोचबे ओकर अन्त छल।"

तलगोहि किछु नहि कहलक।

मुदा ओ बिरजूक बात मानलक — अपन ढंगसँ।

❖

ओ डूबल रहबाक अपन तरीका जनैत छल।

ओ ओहि राति ओ अपन हस्ताक्षर मेटा देलक।

तलगोहि मरि गेल।

जइ मंचपर ओ नाम बरख भरि राज करैत रहल, ओतय ओ नाम फेर कहियो नहि आयल। जे लोक ओहि नामसँ डेराइत छल, जे लोक ओहि नामसँ जुड़ल छल, ओ सभ अचानक

एकटा शून्य दिस तकैत रहि गेल। तलगोहि, जे कहियो चेहरा नहि छल, आब नामो नहि रहल।

आ ओकर स्थानपर एकटा नव हस्ताक्षर उठल।

दोसर आँखि सन, दोसर अर्थ सन — पनिकौआ।

पानिपर बैसल ओ पक्षी, जे अनचोक्के डुबकी मारि, पानिक तरसँ माछ लऽ जाइत अछि, आ फेर ओतबे शान्तिसँ बैसि जाइत अछि — जेना किछु भेबे नहि कएल हो। केओ बुझितो नहि अछि जे ओ कखन आयल, कखन डुबकी मारलक, कखन गेल।

नाम बदलि गेल।

❖

मुदा जे बदलल नहि, से ओकर तरीका छल।

कारण नाम मेटाएब सोझ छल — मुदा आदत मेटाएब कठिन। ओ ओही ढंगसँ जाल बनबैत छल, ओही ढंगसँ छोट ठगकेँ जोड़ैत छल, ओही ढंगसँ हिस्सा लैत छल, आ — सभसँ पैघ गप — वएह एक्केटा छोट, गलती दोहरायल करैत छल, जकरा ओ स्वयं गलती नहि बुझैत छल।

नाम ओकर कपड़ा छल। ओ कपड़ा बदलि लेलक।

मुदा चालि ओकर देह छल। आ देह बदलब कठिन अछि।

❖

सुनयना ठाकुर ओहि भोर बहुत चिन्तित छलीह।

"सर," ओ कहलनि, आ ओकर आवाजमे हारि सन किछु छल, "तलगोहि बिला गेल। जे मंच हम बरख भरि तकैत रहलहुँ, ओतय ओ नाम मरि गेल। जकरा हम पकड़बाक लग छलहुँ, ओ आब कतहु नहि अछि। हम फेर शून्यपर आबि गेलहुँ।"

अभयकान्त झा किछु नहि कहलनि।

ओ केवल ओहि पुरान पन्ना दिस देखलनि, जाहिपर सुनयना स्वयं मास भरि पहिने लिखने रहथि —

"तरीका आदमीक आदति होइत अछि। आदति नुकायब सभसँ कठिन अछि।"

ओ ओहि पंक्तिपर आँगुर राखलनि।

"तूँ नामक पाछाँ छलह, सुनयना," ओ आस्तेसँ कहलनि। "मुदा तूँ स्वयं, पहिल दिन, हमरा किछु आर कहने रहऽ। तूँ कहने रहऽ — नाम नहि, तरीका ताकू। आब नाम मरि गेल।"

ओ रुकलाह।

"तरीका?"

❖

सुनयना ठमकि गेलीह।

किछु क्षण ओ अभयकान्तकेँ तकैत रहलीह, जेना ओ अपने कहल बात अपने बिसरि गेल छलीह, आ आब ओ ओहि बातकेँ फेर पकड़ि रहल हो।

फेर ओ दौड़ि कऽ मेज लग गेलीह।

ओ नव शिकाइत सभ खोललनि — पनिकौआवला। नव नाम, नव मंच, नव हस्ताक्षर। सभ किछु नव।

मुदा ओकर भीतर, ओहि नव पन्ना सभक भीतर, वएह एक्केटा छोट, दोहरायल गलती छल।

वएह एक्के मोड़। वएह एक्के आदति।

"निशान वएह अछि, सर," सुनयना फुसफुसेलीह। हुनकर आवाज कने थरथरायल — भय आ उत्साह, दुनूसँ। "नाम मरि गेल। मुदा निशान — निशान वएह अछि।"

"तखन आदमी सेहो वएह अछि," अभयकान्त कहलनि।

ओ उठलाह, खिड़की लग गेलाह, आ बाहर पानि दिस देखलनि।

"नाम ओकर कपड़ा थिक, सुनयना। ओ जतेक बेर चाहत, कपड़ा बदलत। तलगोहि, पनिकौआ, आ जे नाम आगाँ आओत — सभ कपड़ा थिक। मुदा ओकर चालि, ओकर आदति, ओकर वएह एक्के गलती — ओ ओकर देह थिक। देह बदलब कठिन अछि। आ जाबत ओ ओही देहमे अछि, ताबत ओ वएह आदमी अछि, चाहे केतबो नाम बदलय।"

❖

नन्द आरुणि एहि ठाम फाइल किछु देर लेल बन्द केलनि।

गोप कुमार पुछलनि — "रुकि किएक गेलहुँ?"

"एकटा बात बुझलहुँ, गोप बाबू," नन्द कहलनि, आ ओकर आवाजमे एकटा नव गम्भीरता छल। "खटाँसवला फाइलक अन्तमे अहाँ लिखने रही — 'गोहि दोसर नामसँ फेर उगि सकैत अछि।' हम ओहि दिन बुझने रही, ई खाली कहबाक बात थिक — एकटा नीक पंक्ति, कथाकेँ बन्द करबाक लेल।"

"आ आब?"

"आब बुझि रहल छी — ई कहबाक बात नहि छल। ई चेतावनी छल।"

नन्द पानिकौआवला पन्नापर आँगुर राखलनि।

"तलगोहि, पनिकौआ — दुनू एक्के आदमी। खटाँसक टेण्डर आ एकर संख्या — दुनू वएह जाल। नाम बदलैत रहल; निशान बचल रहल। अहाँ ओहि दिन जे कहने रही, से आइ हमर आँखिक सोझाँ घटि रहल अछि।"

गोप कुमार बहुत देर चुप रहलाह।

"तैँ हम बेर-बेर कहैत छी, नन्द बाबू — कथा न्यायालय नहि, स्मृति थिक। न्यायालय नाम पकड़ैत अछि। ओ तलगोहिकेँ पकड़ितथि, तँ पनिकौआसँ छला जाइतथि। पनिकौआकेँ पकड़ितथि, तँ अगिला नामसँ। न्यायालय सभ नव नामसँ फेर छलाइत अछि। मुदा स्मृति निशान पकड़ैत अछि। जे समाज निशान मोन राखत, ओ सभ नव नामक पाछाँ ओहि पुरान देहकेँ चीन्हि लेत।"

बाहर चन्ना गाछीक पातमे हावा लागल।

दूर, कमला-बलानक पानि थिर छल — ऊपरसँ।

मुदा नन्द आब जनैत छलाह जे थिर पानि की नुकबैत अछि; आ ओकर भीतर, बहुत नीचाँ, एकटा गोहि — जे आब दू नाम बदलि चुकल छल — केना ओतबे शान्तिसँ अपन अगिला भूखक प्रतीक्षा कऽ रहल छल।

अध्याय ६ : दूरीक द्वन्द्व

आब कार्यदलक लग एकटा तरीका छल, एकटा हस्ताक्षर छल, एकटा निशान छल — मुदा चेहरा नहि।

सुनयना ठाकुर भरि राति स्क्रीनक सोझाँ बैसैत छलीह।

ओ जखन पनिकौआवला मंच धरि पहुँचैत, ओ आवाज दोसर ठाम खिसकि जाइत। ओ जखन दोसर ठाम पहुँचैत, ओ फेर तेसर ठाम। जेना कमला-बलानक पानिमे कियो हाथ राखय, आ माछ ओहिसँ ठीक एक बीत आगाँ बहि जाय — सभ बेर एक बित्ता, कहियो बेसी नहि, कहियो कम नहि।

ई ओकर सभसँ पैघ बुधियारी छल। ओ कतहु एक ठाम नहि रहैत छल। ओकर आवाज एक संग दस ठाम छल — आ एक्के संग कतहु नहि।

"सर," ओ एक भोर, थाकल स्वरमे कहलनि, हुनकर आँखि निन्न बिना लाल भऽ गेल छल, "हम दस बेर लग ओकरा पहुँचलहुँ। दस बेर ओ घसकि गेल। ई आदमी देबाल पर देखाइत छाह जकाँ अछि — जतय हाथ राखू, ओतय ओ नहि होइत अछि।"

अभयकान्त झा बहुत काल धरि चुप रहलाह।

फेर ओ ओ बात कहलनि, जे खटाँसवला बरख हुनका सिखौने रहैन — मुदा जकर पूरा अर्थ ओ अखन, एहि नव पानिमे, बुझि रहल छलाह।

"पानिमे गोहिकेँ ताकब मूर्खता थिक, सुनयना।"

सुनयना मूड़ी उठौलनि।

"पानि गोहिक घर थिक। ओतय ओ सभसँ बलगर रहैत अछि। ओतय ओ तोरासँ तेज हेलैत अछि, गहींर डुबकी मारैत अछि, तोहर हाथसँ बचि जाइत अछि। तूँ जतेक ओकरा पानिमे तकबीही, ओतेक ओ तोरा थकेतौह। ओ चाहिते अछि जे तूँ ओकरा पानिमे ताक। कारण ओहिठाम ओ जीतत।"

"तखन हम कतऽ ताकब?"

"गोहि तखने कमजोर होइत अछि," अभयकान्त आस्तेसँ कहलनि, "जखन ओ पानिसँ बाहर, माटिपर अबैत अछि। ओतय ओकर देह भारी भऽ जाइत अछि, चालि मद्धिम भऽ जाइत अछि, आ ओकर सभ डेगक निशान माटिपर पड़ैत अछि।"

❖

ओ उठलाह, खिड़की लग गेलाह।

"ई आदमी संख्या चोराबैत अछि," ओ बाहर पानि दिस तकैत कहलनि। "मुदा संख्यासँ पेट नहि भरैत अछि, सुनयना। संख्यासँ भात नहि बनैए, घर नहि बनैए, माएकेँ किछु नहि पठाओल जाइत अछि। ओकरा ओ संख्या फेर माटिपर आनऽ पड़तै — नोट बनाकऽ,

ईंटा बनाकऽ, जमीन बनाकऽ। जाबत ओ ई नहि करत, ताबत ओकर सभटा पाइ खाली एकटा सपना रहत — स्क्रीनक भीतर बन्द, बेकाज।"

सुनयना ठमकि गेलीह। ओ पहिल बेर बुझऽ लागल छलीह।

"आ जतय ओ पानिसँ माटिपर आओत," अभयकान्त आगाँ बढ़लाह, "ओतय ओकर पएरक निशान पड़त। हम ओकरा पानिमे नहि पकड़ब, सुनयना। हम ओकरा ओहि किनारपर पकड़ब, जतय ओ अपन चोरायल संख्याकेँ साँच पाइ बनाबय जाइत अछि।"

❖

अरुणेश मिश्र, जे कोनमे बैसल सभटा सुनैत रहलाह, पहिल बेर आस्तेसँ मुस्कुरेलाह।

"एहि लेल हम अहाँकेँ खटाँसवला बरखसँ संगे रखने छी, अभयकान्त," ओ कहलनि। "सुनयना नव पानि जनैत छथि — ओ स्क्रीन पढ़ि लैत छथि, संकेत पढ़ि लैत छथि। मुदा ओ नव पानि जनैत छथि; ओ ओहि पुरान माटिकेँ नहि जनैत छथि, जतय सभ अपराधक पाइ, अन्तमे, उतरैत अछि। आ अहाँ ओ माटि जनैत छी।"

ओ मेजपर हाथ राखलनि।

"नव पानि, पुरान माटि। एक बिना दोसर अपूर्ण। जँ दुनूकेँ जोड़ि नहि सकब, तँ ई गोहि कहियो नहि पकड़ाएत।"

❖

एहि तरहेँ शिकारक दिशा बदलल।

कार्यदल स्क्रीनक पाछाँ दौड़ब बन्द नहि केलक — कारण ओहिसँ गोहि सतर्क भऽ जाइत। मुदा ओकर असली नजरि आब ओहि पुरान बाटपर गेल, जतय कारी पाइ उज्जर होइत अछि।

हवाला। टेण्डर। बेनामी दोकान। अचानक बनैत घर। बिना कारणक पैघ खरीद। ओ सभ जगह, जतय अकस्मात्, बिना कोनो स्पष्ट कारणक, पाइ हिलऽ लागल छल।

आ एहि पुरान माटिकेँ पढ़बाक लेल, हुनका एकटा पुरान आँखि चाही छल।

धीरकेतु झाकेँ फेर बजाओल गेल।

❖

धीरकेतु झा खटाँसवला बरखक आदमी छलाह।

ओ कहियो अधिकारी नहि रहथि — ओ ओहि लोकमे रहथि, जे अपराध आ पुलिसक बीचक कुहेस पट्टीमे जीबैत अछि। चेहरा, चालि आ पाइक बाट — ई सभ ओ नजदीकसँ चिन्हैत छलाह। खटाँसक अन्तमे ओ ओ आदमी छलाह, जे नील गाड़ी दिस आँगुर उठाकऽ कहने रहथि — "वएह तीनू।"

ओ आब बूढ़ भऽ गेल छलाह। हुनकर कान्ह झुकि गेल छल, हाथ काँपैत छल। मुदा हुनकर आँखि ओतबे तेज रहल।

"नव अपराध हम नहि बुझैत छी, साहेब," ओ धीरे कहलनि, जखन सुनयना हुनका स्क्रीन देखबऽ चाहलनि। "ई संख्या, ई स्क्रीन — ई हमर संसार नहि। हम एहिमे अन्हर छी।"

फेर ओ मुस्कुरेलाह — बूढ़, दन्तहीन, मुदा तेज मुस्की।

"मुदा पुरान पाइक गन्ध हम आइयो चिन्हैत छी। पाइक अपन गन्ध होइत अछि, साहेब — नीक पाइक अलग, कारी पाइक अलग। आ जखन कारी पाइ अपनाकेँ उज्जर देखाबऽ चाहैत अछि, तखन ओ एकटा खास गन्ध छोड़ैत अछि। अहाँ हमरा ओ जगह देखाऊ, जतय अचानक पाइ बहऽ लागल अछि — हम बता देब जे ओ पुरानका कोन बाटसँ आबि रहल अछि।"

❖

नन्द आरुणि पन्ना बन्द केलनि।

"गोप बाबू, ई अजीब बात थिक। नव गोहि पानिमे अजेय अछि। मुदा ओकरा पकड़बाक लेल कार्यदल एकटा बूढ़ आदमीकेँ बजा रहल अछि, जे स्क्रीन देखबो नहि जनैत।"

गोप कुमार धीरे कहलनि — "एही लेल, नन्द बाबू। नव गोहि नव पानि बनबैत अछि; मुदा पाइ पुरानके बाटसँ जमीनपर उतरैत अछि। जे नव बाट बनबैत अछि, ओ नव नजरिसँ बचैत अछि — कारण नव नजरि अखन ओकरा बुझैत नहि। मुदा जे पुरान बाट पकड़ैत अछि, ओ पुरान नजरिमे पकड़ा जाइत अछि।"

ओ खिड़की दिस देखलनि।

"अपराध आगाँ बढ़ैत अछि, नन्द बाबू। ओ नव यन्त्र सिखैत अछि, नव भाषा सिखैत अछि, नव पानि बनबैत अछि। मुदा ओकरा एकटा पुरान बात कहियो नहि छुटैत — ओकरा अन्तमे पाइ चाही, आ पाइकेँ जमीनपर उतरऽ पड़ैत अछि। आ जमीन पुरान अछि। जमीन सभटा मोन राखैत अछि।"

अध्याय ७ : बूढ़ गोहिक छाया

अभयकान्त झा ओहि सूचीकेँ बहुत देर तकैत रहलाह।

जिलाभरिमे किछु ठाम अचानक पाइ हिलल छल।

एकटा बन्द चिनी-मिलक कागच फेर जीवित भेल — जकर कोनो नव मालिक नहि छल, कोनो नव योजना नहि, तैयो जकर खातामे अचानक पाइ आबऽ लागल। एकटा पुरान धर्मशालाक जीर्णोद्धार बिना कोनो दानदाताक नामे शुरू भेल — पत्थर आयल, मजदूर आयल, पाइ आयल, मुदा देनिहार ककरो नहि देखल। एकटा गामक पोखरिक ठेका दोगुना दाममे उठल, आ उठाबऽवला केओ नहि चिन्हैत छल — ओ कतऽसँ आयल, कतऽ रहैत अछि, ककरो नहि बूझल।

अलग-अलग देखलापर ई सभ सामान्य छल।

बन्द मिल फेर खुजि सकैत अछि। धर्मशाला बनि सकैत अछि। ठेका उठि सकैत अछि।

एहिमे कोनो अपराध नहि छल।

मुदा अभयकान्तकेँ किछु मोन पड़ल।

❖

ओ फाइलघरसँ खटाँसवला पुरान पेटार मंगौलनि।

ओहि पेटारमे बरख पहिनेक तेन्दर-हवालाक कागच छल — ओ सभ कागच, जे खटाँसक पाइकेँ उज्जर बनबैत छल। ओ पेटार बन्द भेने बरख भऽ गेल छल; ओकर फीता घिसल, कागच पीयर।

अभयकान्त ओहि राति दुनू सूची — पुरान आ नव — कात-कात राखि तकैत रहलाह।

दफ्तरमे केवल एकटा बल्ब जरैत छल। बाहर राति गहिर छल। कमला-बलानक दिससँ ओ हलुक, लगातार आवाज आबि रहल छल, जे पानि रातिमे अपनेसँ करैत अछि।

ओ एक-एक कागच मिलबैत रहलाह। पुरानका बाट, नवका बाट। पुरानका मोड़, नवका मोड़। पुरानका झूठ कागच, नवका झूठ कागच।

आ भोर होइत-होइत, ओ ठमकि गेलाह।

❖

पाइ उतारबाक ढंग एक्के छल।

वएह मोड़। वएह बेनामी दोकानक शृंखला। ओही ढंगक फुसियाही कागच, ओही क्रममे, ओही सावधानीसँ। जेना बहुत बरख पहिने कियो एहि बाटकेँ बनौने छल — एतेक

ध्यानसँ, एतेक कारीगरीसँ, जे ओ एकटा हस्ताक्षर बनि गेल छल। आ आब कियो ओहि बन्द बाटकेँ फेर खोलि देने छल — ओही हस्ताक्षरक संग।

"ई नव आदमीक हाथ नहि," अभयकान्त भोरे सुनयनासँ कहलनि, जखन ओ एलीह। हुनकर आँखि रातिभरिक जागरणसँ लाल छल, मुदा हुनकर स्वरमे एकटा निश्चय छल। "नव गोहि संख्या जनैत अछि। ओ स्क्रीनक भीतर अजेय अछि। मुदा पाइकेँ माटिपर उतारब — ई ओ नहि जनैए। ई अलग विद्या थिक, अलग पीढ़ीक विद्या। ओकरा कियो सिखा रहल अछि — कियो, जे ई बाट बहुत पहिने, अपने हाथसँ, बनौने छल।"

❖

धीरकेतु झा सूची देखलनि।

ओ बूढ़ आदमी बहुत देर ओहि मोड़, ओहि बाट, ओहि दोकानक शृंखलाकेँ तकैत रहलाह। हुनकर आँखि आस्ते-आस्ते घोकचल, जेना बहुत पुरान किछु मोन पाड़ि रहल होथि — एकटा गन्ध, जे बरखो पहिने सुँघने छला, आ जकरा ओ बिसरि गेल छलाह।

फेर हुनकर मुँहसँ एकटा नाम निकलल — जकरा ओ बहुत बरखसँ नहि सुनने रहथि।

"बिरजू साह।"

कोठरीमे किछु क्षण मौन रहल।

❖

बिरजू साह ओ आदमी छलाह, जे खटाँसवला बरखमे कहियो पकड़ल नहि गेल छलाह।

कारण ओ कहियो चेहरा नहि रहथि। गोली दोसर चलबैत छल; लाश दोसराक खसैत छल; अखबारमे नाम दोसराक छपैत छल। बिरजू खाली पाइ जरबैत आ फेर बनबैत छलाह — चुपचाप, अदृश्य, पाछाँ बैसल। ओ ओहि लोकमे रहथि, जकरा पुलिस कहियो नहि पकड़ि पबैत, कारण ओकर हाथमे कहियो खून नहि होइत अछि— केवल कागच होइत अछि, आ कागच बाजैत नहि अछि।

खटाँस मरल, तँ सभ बुझलक बिरजू सेहो समाप्त। हुनकर धार सुखा गेल, आ हुनकर नाम स्मृतिसँ मेटा गेल।

"ओ फेर उठि गेलाह?" अरुणेश पुछलनि।

"नहि," अभयकान्त कहलनि। "ओ स्वयं नहि उठलाह। बूढ़ आदमी अपने नहि उठैत अछि— ओ थाकि चुकल छथि। ओ फेर बजाओल गेलाह। नव गोहिकेँ पुरान बाट चाही छल — आ ओ बाट बिरजू साहक विद्यामे बन्द छल। नव गोहि संख्या जनैत अछि, बिरजू माटि जनैत छथि। एक बिना दोसर अपूर्ण। तेँ दुनू जुड़ल।"

ओ ठमकलाह।

"ई दू पीढ़ीक संगम थिक, सर। नव पानि, पुरान माटि। एक्के जालक दू छोर — एक छोर स्क्रीनमे, एक छोर एहि पुरान कागचमे।"

❖

अरुणेश मिश्र बहुत देर सोचलनि।

फेर ओ ओ बात कहलनि, जे ओ सभ बेर कहैत छलाह — मुदा एहि बेर ओहिमे एकटा नव भार छल।

"अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू। बिरजू साह पुरान आदमी थिक — बहुत बरख बचल रहलाह, कारण ओ कहियो जल्दी नहि केलनि, कहियो लापरवाह नहि भेलाह। हुनका पकड़ब सोझ नहि। आ बिरजूकेँ छूबैत देरी, नव गोहि सतर्क भऽ जाएत — ओ बुझि जाएत जे हम माटिपर पहुँचि गेलहुँ, आ ओ फेर पानिमे गहींर उतरि जाएत।"

"तँ हम प्रतीक्षा करब?" सुनयना पुछलनि।

"नहि," अभयकान्त कहलनि। "हम प्रतीक्षा नहि करब। हम बिरजू साहकेँ तकैत रहब — मुदा दूरसँ, बिना छुने। कारण जे नव गोहि बिरजूकेँ पकड़ने अछि, ओ देर-सबेर बिरजू लग आओत। ओकरा आबऽ पड़तै — कारण ओकर पूरा पाइ बिरजूक बाटपर टिकल अछि। आ ओहि दिन, पहिल बेर, ओ पानिसँ बाहर, माटिपर, बिरजू लग, एक पएर राखत।"

ओ खिड़की दिस देखलनि।

"आ ओहि एक पएरक प्रतीक्षा हम करब।"

❖

नन्द आरुणि पन्ना उनटौलनि।

"गोप बाबू, ई अजीब बात थिक। खटाँस मरि गेल; मुदा ओकर पाइ जरबऽवला आदमी बचल रहल। आ ओही बचल आदमीक कारण नव अपराधी पकड़मे आबऽवला अछि।"

गोप कुमार बहुत देर चुप रहलाह।

फेर ओ आस्तेसँ कहलनि — "एही लेल हम कहने रही, नन्द बाबू — गोहि व्यक्ति सेहो होइत अछि, जाल सेहो। खटाँस व्यक्ति छल; ओ मरल। बिरजूक बाट जाल छल; ओ नहि मरल। जाल जीवित रहल, तँ ओहिपर नव गोहि बैसि गेल। मुदा जाल जीवित रहल, तेँ ओ नव गोहिकेँ पकड़बाक रस्ता सेहो जीवित रखलक।"

बाहर पीपरक पात थरथरायल।

"अपराधक स्मृति दुधारी अछि, नन्द बाबू। ओ अपराधीकेँ पुरान तरीका सिखबैत अछि — आ वएह स्मृति शिकारीकेँ पुरान तरीका पहचानऽ सिखबैत अछि। जे समाज अपन अपराधक स्मृति राखैत अछि, ओ अगिला अपराधकेँ ओकर पुरान छाहसँ चीन्हि लैत अछि। नीक आ अधलाह, दुनू एक्के स्मृतिमे बान्हल रहैत अछि।"

अध्याय ८ : जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल

सभसँ पैघ गोहिक सभसँ पैघ कमजोरी प्रायः पानि नहि होइत अछि।

ओकर कमजोरी ओकर अपन मोन होइत अछि।

पनिकौआ अपन नाम मेटौने छल। ओ तलगोहि छल; ओ तलगोहिकेँ मारि, पनिकौआ बनल। ओ फेर अदृश्य भऽ गेल छल — पानिक भीतर, सुरक्षित, ककरो हाथसँ दूर। ओकरा लग सभ किछु छल। ओकरा लग ततेक पाइ छल, जकर हिसाब ओकरा स्वयं नहि छल।

मुदा जे आदमी अपन नाम मेटा दैत अछि, ओकर भीतर एकटा भूख रहि जाइत अछि।

ओ भूख पाइक नहि होइए। ओ भूख भयक नहि होइए। ओ भूख एकटा एहन वस्तुक होइत अछि, जकरा ओ स्वयं स्वीकार नहि करऽ चाहैए — जे कियो, कतहु, बुझय जे हम छी। जे कियो, एक बेर, ओकर आँखिमे ओकर नाम देखय।

आ ओ भूख, अन्तमे, ओकरा माटिपर आनि देलक।

❖

बहुत बरख पहिने, ओ एकटा मोबाइल-दोकानसँ, झूठ इलजाम लगाकऽ, निकालल गेल छल।

जाइत-जाइत, पूरा दोकानक सामने, मालिक कहने रहैक — "...मजदूरक बेटा मजदूरे रहत।"

ओ वाक्य ओकरा भीतर बरखो जरैत रहल।

आब ओकरा लग सभ किछु छल। जे संख्या ओ चाहय, से ओकर छल। जइ आदमीकेँ ओ चाहय, तकरा ओ फोड़ि सकैत अछि। जइ शहरकेँ ओ चाहय, से ओकर भयमे जीबैत छल — बिना ई जनने जे ओ भय ककर।

मुदा एकटा बात ओ नहि पाबि सकल छल।

ओ ओहि दोकानदारक आँखिमे अपन नाम नहि देखि सकल छल। कारण ओकर कोनो नामे नहि छल। ओ ओहि आदमी लग जा कऽ, ओकर आँखिमे तकैत, ई नहि कहि सकैत छल — "देखह, ओ मजदूरक बेटा, जकरा तूँ चोर कहने रहह, आइ ओ की भऽ गेल।"

ओ पूरा संसारकेँ लूटि लेने छल। मुदा ओइ एकटा आदमीकेँ अपन जीत नहि देखा सकल।

आ यएह ओकर सभसँ पैघ पीड़ा छल।

❖

एक साँझ ओ ओहि पुरान कस्बा दिस घुरल।

ओ स्वयं सोझाँ नहि गेल — ओ ककरो सोझाँ नहि जाइत छल, ई ओकर पहिल आ अन्तिम नियम छल। मुदा ओ बिरजू साहक बाटसँ, ओहि कस्बाक किछु ठाम, पाइ पठौलक।

ओकर माएक टूटल घर, जकरा बरखा सभ साल गलबैत छल, अचानक पक्का भऽ गेल। ईंटा आयल, सीमेन्ट आयल, मजदूर आयल — आ ककरो नहि बूझल भेलै जे ई पाइ ककर छलै।

ओकर गामक ओ कच्चा बाट, जकरापर बरख भरि कादो रहैत छल, अचानक ओ ढलाइ बला भऽ गेल।

आ ओ पुरान मोबाइल-दोकान, जकर मालिक ओकरा चोर कहने रहैक — ओहि मालिकक बेटाकेँ, बिना कोनो कारण, एकटा पैघ रकम भेटल। एकटा अनचिन्ह "दानदाता"सँ, जकर नाम कतहु नहि छल।

ओ ककरो नहि कहलक जे ई हम केलहुँ।

मुदा ओकरा एतबा बूझल छल जे कस्बा फुसफुसाएत — ई पाइ ककर? के देलक? किएक देलक? आ ओहि फुसफुसाहटिमे, बिना नामक, ओकर नाम रहत। कियो ओकरा नहि चिन्हत, मुदा सभ ओकर उपस्थितिकेँ महसूस करत। ओ अदृश्य रहत, आ तैयो — पहिल बेर — देखल जाएत।

ओकरा लागल जे ओ बहुत चतुर छल।

मुदा ई ओकर पहिल गलती छल।

❖

बिरजू साहक चेतावनी ओकर कानमे बजैत छल — पानिक भीतरे रह, ऊपर आबऽ जुनि।

मुदा ओ नहि सुनलक। कारण भूख चेतावनीसँ बेसी जोर सँ बजैत अछि।

❖

धीरकेतु झा ओही कस्बाक खबर आनलनि।

"साहेब," ओ आस्तेसँ कहलनि, "एकटा गाममे अचानक पाइ उतरल अछि। बिना कारण। बिना दानदाताक नाम। घर बनल, बाट बनल, ककरो पैघ रकम भेटल — आ जइ बाटसँ ई पाइ आयल, ओ बाट वएह अछि। बिरजूवला।"

अभयकान्त झा नक्शापर ओ कस्बा देखलनि।

ओ छोट, साधारण कस्बा छल। कोनो कारण नहि छल जे ओतय एतेक पाइ उतरय। कोनो नेता ओतय नहि रहैत छल; कोनो चुनाव ओतय नहि होइत छल; कोनो पैघ काज ओतय नहि छल। ओ ओहन जगह छल, जकरा संसार बिसरि गेल छल।

"जे आदमी बिना कारण एक जगह पाइ उतारैत अछि," अभयकान्त बहुत देर सोचि, आस्तेसँ कहलनि, "ओहि जगहसँ ओ कोनो कारणसँ जुड़ल अछि। पाइ मोटा-मोटी बुद्धिसँ जाइत अछि, सुनयना — जतय लाभ हो, ओतय जाइत अछि। मुदा एहि पाइमे बुद्धि नहि अछि। एहिमे मोन अछि।"

सुनयना हुनका दिस तकलनि।

"ई पाइ ककरो किछु देखबऽ चाहैत अछि," अभयकान्त आगाँ बढ़लाह। "ई ककरो किछु बुझबऽ चाहैत अछि। जे आदमी बरख भरि अदृश्य रहल, ओ अचानक ओही जगह पाइ पठा रहल अछि, जतय ओकरा कहियो कियो नहि देखने छल। ई पाइ नहि, ई एकटा सन्देश थिक। आ सभ सन्देशक एकटा पठेनिहार होइत अछि।"

❖

सुनयना ओहि कस्बाक पुरान कागच निकाललनि।

बरख-बरखक जनगणना। विद्यालयक सूची। पुरान दोकानक बही। ओ सभटा, जे कोनो साधारण कस्बाक साधारण स्मृति होइत अछि।

आ ओहि सभक भीतर, बहुत नीचाँ, एकटा साधारण नाम छल —

एकटा भट्ठा-मजदूरक बेटा। जे कइएक बरख पहिने, तेरह बरखक उमेरमे, ई कस्बा छोड़ि गेल छल। जकरा फेर कियो नहि देखने छल। जकर नाम एतेक साधारण छल जे कोनो बहीमे ओ केवल एक बेर आयल छल, आ फेर कहियो नहि।

सुनयना ओहि नामपर आँगुर राखलनि। हुनकर आवाज कने थरथरायल।

"सर," ओ फुसफुसेलीह, "मोनमे होइत अछि — जे हमरा लग पहिल बेर एकटा चेहरा अछि।"

अभयकान्त बहुत देर ओहि नामकेँ तकैत रहलाह।

फेर ओ खाली एतबा कहलनि — "नाम अछि, सुनयना। मुदा प्रमाण नहि। एकटा गाममे पाइ उतरब, आ ओहि गामसँ एकटा बालकक बहुत पुरान नाम — ई दुनूकेँ जोड़ब हमर मोनमे अछि, न्यायालयमे नहि। आ आदमी अखनहुँ पानिमे अछि। हम एतबे जनैत छी जे ओ एक बेर, एक क्षण लेल, माटिपर एक पएर राखि चुकल अछि।"

ओ रुकलाह।

"आब हम प्रतीक्षा करब — जाबत ओ दोसर पएर राखय।"

❖

नन्द आरुणि ओहि पन्नापर आँगुर राखि बहुत काल बैसल रहलाह।

"जे आदमी सभसँ बलगर छल," ओ अन्तमे आस्तेसँ कहलनि, "ओ अपन माएक घर पक्का करबाक लेल पकड़मे आबि गेल।"

गोप कुमार मूड़ी हिलौलनि।

"एही लेल, नन्द बाबू, कोनो गोहि पूर्ण रूपेँ गोहि नहि होइए। पानिक भीतर ओ कतबो बलगर हो, ओकर भीतर एकटा मनुष्य रहि जाइत अछि। आ मनुष्यकेँ देखल जेबाक भूख रहैत अछि। ओ भूख भोजनसँ पैघ अछि, नन्द बाबू — कारण भोजन देहकेँ जियबैत अछि, आ देखल जएब आत्माकेँ।"

ओ किछु क्षण चुप रहलाह।

"खटाँस देह लेल मरल — ओ चाहैत छल जे लोक ओकरा गोलीक भयसँ देखय। ई नाम लेल मरत — ई चाहैत अछि जे लोक ओकरा ओकर पाइक चमत्कारसँ देखय। दुनूक भूख एक्के छल — देखल जएब। खाली पानि अलग छल। आ ओही भूखमे, नन्द बाबू, ई अपन जलसमाधिक पहिल डेग स्वयं उठा लेलक — बिनु बुझने, अपने पएरसँ।"

बाहर कमला-बलानक पानि साँझक रौदमे थिर छल।

मुदा नन्द आब स्पष्ट देखि रहल छलाह — पानिक बहुत तरसँ, एकटा गोहि पहिल बेर किनार दिस मुँह केने छल।

अध्याय ९ : अनुमान आ प्रमाण

"हमरा लग एकटा नाम अछि," सुनयना ठाकुर कहलनि। "एकटा चेहरा। एकटा गाम। एकटा बालक, जे बरख पहिने ई सभ छोड़ि गेल। तखन हम ओकरा पकड़ैत किएक नहि छी?"

अरुणेश मिश्र बहुत देर चुप रहलाह।

फेर ओ ओ बात दोहरौलनि, जे ओ खटाँसवला बरखसँ दोहराबैत आयल छलाह — मुदा एहि बेर ओ आस्तेसँ, लगभग पिताक स्वरमे कहलनि —

"अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू, बेटी।"

ओ मेजपर हाथ राखलनि।

"अहाँ लग जे अछि, ओ शक थिक। शक हमरा भीतर रहैत अछि — ओ हमरा दिशा दैत अछि, मुदा ओ स्वयं कोनो प्रमाण नहि। न्यायालय शकपर नहि चलैए। न्यायालयकेँ ओ चाही, जे हाथमे धरल जा सकय — कागच, आवाज, गवाह, ओ क्षण जखन ओ आदमी आ ओकर काज एक संग, एक जगह, एक्के समयमे हो। ओ क्षण अखन नहि आयल अछि।"

"तँ हम प्रतीक्षा करैत रहब?" सुनयना कने अधीर भेलीह। "जाबत ओ आर हजार गोटेकेँ लूटय?"

"नहि। हम प्रतीक्षा नहि, तैयारी करब।" अरुणेशक स्वर थिर रहल। "शिकारीक धैर्य आलस नहि होइए, सुनयना। ओ जागल प्रतीक्षा होइत अछि। हम ओकरा तकैत रहब, ओकर सभ डेग नोट करैत रहब — आ जहिना ओ एक गलती करत, जकर प्रतीक्षा हम कऽ रहल छी, तहिना हम ओहिठाम पहुँचब। बिना प्रमाणक पकड़ब, ओकरा छोड़ि देब थिक। प्रमाणक संग पकड़ब, ओकरा बन्द करब थिक।"

❖

एहि बीच, पानिक तर, गोहि बदलि रहल छल।

पनिकौआक लग आब ओतेक पाइ छल, जकर ओकरा स्वयं हिसाब नहि छल। मुदा पाइ भरि गेलाक बाद मनुष्यक भूख पाइ नहि रहैए — ओ किछु आर मांगय लागैत अछि।

ओ अदृश्य रहि कऽ थाकि गेल छल।

खटाँस भयसँ राज करैत छल, आ नगर ओकर नाम जनैत छल। लोक ओकर नाम सुनि काँपैत छल — मुदा ओ नाम जनैत छल। पनिकौआ सभ किछु राखैत छल — पाइ, तरीका, अदृश्य कर — मुदा ओकर नाम केओ नहि जनैत छल।

आ एक दिन ओकरा लागल — जे राज ककरो नहि देखाइए, से राज की?

ओ ओहि दिशामे बढ़ऽ लागल, जाहिमे खटाँस बढ़ल छल — छाह छोड़ि, कुर्सी दिस।

❖

ओ किछु "वैध" दोकान खोलबेलक — दोसराक नामे। किछु समाज-सेवाक काज करौलक — दोसराक नामे। किछु एहन लोकसँ जुड़ल, जे पाइक बदला संरक्षण दैत छल — नेता, ठेकेदार, ओ लोक, जे खटाँसक बादो ओही कुर्सीपर बैसल रहल छल, आ जकरा नव पाइ चाही छल।

ओ अदृश्य गोहि आब किनार दिस, इजोत दिस, बढ़ि रहल छल।

ओ बुझैत नहि छल जे ओ की कऽ रहल अछि। ओ बुझैत छल जे ओ पैघ भऽ रहल अछि — जेना खटाँस पैघ भेल छल। ओकरा नहि बूझल छल जे खटाँस ठीक ओही बाटपर, ठीक ओहिना पैघ भऽ, अन्तमे किनारपर मरल छल।

❖

अभयकान्त झा ई देखलनि, आ हुनकर आँखिमे ओ पुरान स्थिरता एलनि।

"ओ थाकि गेल, सुनयना," ओ आस्तेसँ कहलनि। "देखू — जे आदमी बरखो पानिक तर नुकायल रहल, ओ अचानक वैध दोकान खोलि रहल अछि, समाज-सेवा करा रहल अछि, नेता-ठेकेदारसँ जुड़ि रहल अछि। किएक?"

"किएक, सर?"

"कारण अदृश्यता ओकर सभसँ पैघ हथियार छल — आ ओ स्वयं ओकरा छोड़ि रहल अछि।" अभयकान्त उठि खिड़की लग गेलाह। "जे पानिक तर सुरक्षित छल, ओ किनार दिस मुँह केने अछि। किएक तँ ओ थाकि गेल — असगर रहि, अदृश्य रहि, बिना नामक रहि। ओ चाहैत अछि जे लोक ओकरा देखय। ओ ओ भूल कऽ रहल अछि, जे सभ पैघ अपराधी अन्तमे करैत अछि — ओ चाहऽ लागैत अछि जे संसार ओकरा जानय। आ जकरा संसार जानि सकैत अछि, ओकरा हमहूँ पकड़ि सकैत छी।"

ओ पाछाँ घुरलाह।

"खटाँस बन्दूकसँ पकड़मे आयल, कारण बन्दूक देखाइत छल। ई अपन भूखसँ पकड़मे आओत — कारण भूख सेहो, अन्तमे, देखा जाइत अछि।"

❖

नन्द आरुणि पन्ना पढ़ि रुकलाह।

"गोप बाबू, ई अजीब बात थिक। जे आदमी नाम मेटाकऽ बलगर भेल, ओ फेर नाम पेबाक लेल कमजोर भऽ रहल अछि।"

गोप कुमार मूड़ी हिलौलनि।

"मनुष्य छाह बनि जीबि सकैत अछि, नन्द बाबू — मुदा बहुत दिन नहि। एक दिन छाह अपन देह मांगय लागैत अछि। ओ चाहऽ लागैत अछि जे कियो ओकरा छूबय, कियो ओकर नाम बाजय, कियो ओकर आँखिमे ओकरा देखय। आ ओही चाहमे, ओ अपन सभसँ सुरक्षित ठेकानल जमीन छोड़ि दैत अछि।"

ओ खिड़की दिस देखलनि।

"खटाँस देह लेल मरल। ई नाम लेल मरत। दुनूक भूख एक्के छल — देखल जएब। केवल पानि अलग छल, नन्द बाबू। आ इतिहासमे, बेर-बेर, गोहि पानिसँ नहि, अपन एही भूखसँ मरैत आयल अछि।"

अध्याय १० : दरार

बिरजू साह डरि रहल छलाह।

ओ पुरान पानिक आदमी छलाह, आ पुरान पानिक आदमी एकटा बात नीक जकाँ जनैत अछि — जे किनार दिस बढ़ैत अछि, ओ डूबैत अछि। पानिक तर सुरक्षा अछि; किनारपर इजोत अछि; आ इजोतमे पकड़ा जेबाक खतरा अछि।

बिरजू अपन पूरा जीवन ओही एक विद्यासँ बचल रहल छलाह — कहियो चेहरा नहि बनब। खटाँस चेहरा बनल; ओ मरल। ओकर आगाँ-पाछाँ केतेको लोक चेहरा बनल; सभ मरल वा जेल गेल। केवल बिरजू बचल रहलाह — कारण ओ कहियो देखाइ नहि देलनि।

आब ओ ओही पुरान डरकेँ फेर सुँघि रहल छलाह।

पनिकौआ किनार दिस बढ़ि रहल छल। वैध दोकान, समाज-सेवा, नेता-ठेकेदारसँ भेट — ई सभ ओहि बालकक नहि, कोनो राजा बनऽ चाहनिहार आदमीक लक्षण छल। आ बिरजू जनैत छलाह जे राजा बनऽ चाहनिहार आदमी सभसँ पहिने पकड़ाइत अछि।

❖

ओ पनिकौआकेँ फोनपर बुझौलनि।

"बेटा," ओ धीरे, मुदा कड़ा स्वरमे कहलनि, "पानिक तर रह। ऊपर आबऽ जुनि। जे नाम मेटौलक, ओ नाम पेबाक लेल फेर किएक तड़पैत अछि? तोरा लग सभ किछु छह। पाइ, तरीका, अदृश्यता अछि। बस अदृश्य रह — आ तूँ जीबैत रहबीही।"

"अहाँ बूढ़ भऽ गेलहुँ, बिरजू बाबू," पनिकौआ कहलक।

बिरजू चुप भऽ गेलाह।

"अहाँ भयमे जीबैत छी," पनिकौआ आगाँ बढ़ल। "अहाँ पूरा जीवन नुकाइत रहलहुँ, आ अन्तमे अहाँ लग की अछि? किछु नहि। हम नुकाइत नहि छी। हम भयकेँ बेचैत छी। हम ओ बनब, जकरा ई संसार देखय।"

ओहि एक्के वाक्यमे, दू पीढ़ीक बीचक दरार खुजि गेल।

❖

बूढ़ गोहि रस्ता जनैत छल — मुदा ओ रस्ता डूबबसँ बचबाक रस्ता छल।

नव गोहि रस्ता बनबैत छल — मुदा ओ रस्ता, बिना ककरो बुझने, किनार दिस जाइत छल।

एक बचय चाहैत छल; दोसर देखाय चाहैत छल। एक लेल अपराध जीबैत रहबाक साधन छल; दोसर लेल अपराध देखल जेबाक बाट। जे पानि हुनका दुनूकेँ जोड़ने छल, ओही पानिमे आब हुनका बीच एकटा दरार आबि गेल।

आ दरार ओ जगह थिक, जतयसँ पानि भीतर घुसैत अछि।

❖

अभयकान्त झा ई बुझैत छलाह।

"जाल कहियो बाहरसँ नहि टूटैए, सुनयना," ओ कहलनि। "ककरो लग एतेक बल नहि होइए जे ओ एहन जालकेँ बाहरसँ तोड़ि सकय। जाल भीतरसँ टूटैत अछि। दू आदमी, जे एक संग अपराध करैत अछि, ओ एक संग नहि डूबय चाहैत अछि। जखन गरमी बढ़ैत अछि, तखन सभ अपन-अपन जान बचाबऽ लागैत अछि — आ ओही क्षण जालक गिट्ठऽ ढील पड़ैत अछि।"

"तँ हम बिरजू साहकेँ पकड़ब?" सुनयना पुछलनि।

"नहि।" अभयकान्त मूड़ी हिलौलनि। "बिरजूकेँ पकड़ब मूर्खता थिक। ओ बूढ़ आदमी थिक, चुप रहऽ जनैत अछि, आ हमरा लग हुनका पकड़बाक प्रमाण नहि। ओकरा पकड़ैत

देरी, पनिकौआ बुझि जाएत जे हम माटिपर पहुँचि गेलहुँ — आ ओ फेर पानिमे गहींर उतरि जाएत।"

ओ रुकलाह।

"हम बिरजूकेँ पकड़ब नहि। हम केवल बिरजूकेँ बुझऽ देब जे किछु आबि रहल अछि।"

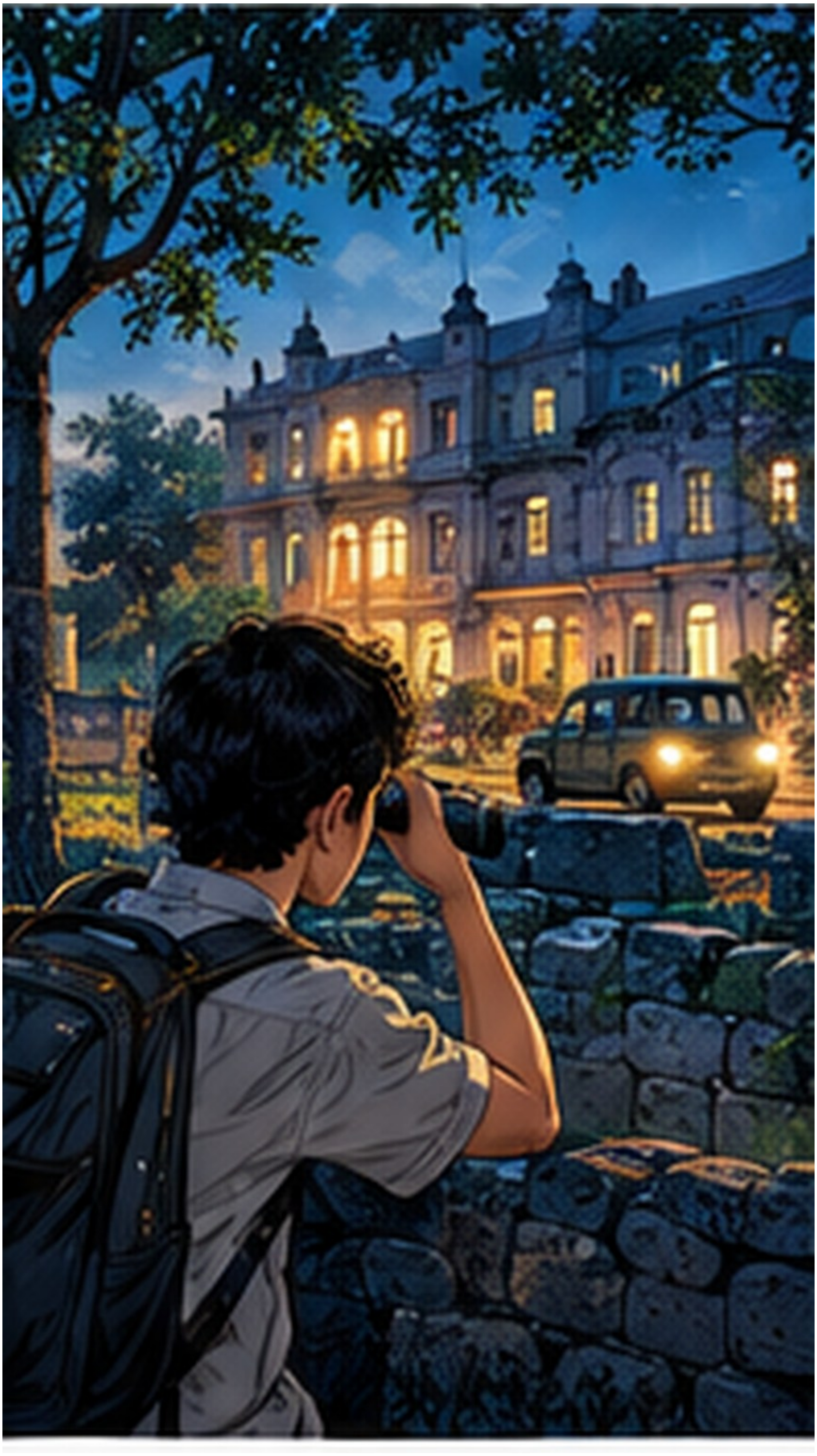

❖

आ ओ ठीक यएह केलनि।

एकटा कनफुसकी, अफवाह, जे बिरजूक कान धरि पहुँचय। एकटा छोट छापा, दोसर ठाम, जकर कोनो सम्बन्ध बिरजूसँ नहि छल — मुदा जे बिरजूकेँ बेचैन कऽ देत। एकटा पुरान परिचितक अचानक गिरफ्तारी, जे बिरजूकेँ मोन पाड़ि देत जे पुरान बाट फेर खुजि रहल अछि।

एतबे।

मुदा बूढ़ गोहि लेल एतबे बहुत छल।

बिरजू साह ओ करऽ लगलाह, जे पुरान पानिक आदमी संकटमे करैत अछि — ओ अपन बाट समेटऽ लगलाह। ओ पनिकौआसँ दूरी बनाबऽ लगलाह; फोन कम केलनि, भेट बन्द केलनि। ओ अपन पुरान कागच जरबऽ लगलाह; ओ पाइ, जकरा ओ बहुत बरखसँ जोगने रहथि, ओकरा सुरक्षित करऽ लगलाह।

आ जे आदमी अपन बाट समेटैत अछि, ओ बिना बुझने अपन पएरक निशान छोड़ैत अछि।

❖

धीरकेतु झा ओहि निशानकेँ पढ़लनि।

"साहेब," ओ आस्तेसँ कहलनि, "बिरजू साह भागबाक तैयारीमे छथि। हम ओ गन्ध चिन्हैत छी। जे आदमी भागबाक तैयारी करैत अछि, ओ अपन सभसँ जरूरी पाइ पहिने सुरक्षित करैत अछि। ओही पाइक बाट हमरा ओहि दोसर आदमी धरि लऽ जाएत।"

अभयकान्त बहुत देर सोचलनि।

"नहि," ओ अन्तमे कहलनि। "बिरजूकेँ भागऽ दिअ।"

धीरकेतु आश्चर्यसँ तकलनि।

"बूढ़ गोहि हमर लक्ष्य नहि," अभयकान्त कहलनि। "ओ केवल बाट थिक। हम बाट पकड़ि की करब? हमरा ओ नव गोहि चाही, जे किनार दिस बढ़ि रहल अछि। आ बिरजू भागत, तँ पनिकौआ असगर भऽ जाएत। ओकर पूरा पाइ बिरजूक बाटपर टिकल छल; बिरजू गेल, तँ ओ बाट बन्द भऽ जाएत। आ असगर गोहि, जकर बाट बन्द भऽ जाइत अछि, ओ सभसँ पहिने गलती करैत अछि।"

❖

नन्द आरुणि बहुत देर चुप रहलाह।

"बिरजू साह बचि गेलाह?" ओ अन्तमे पुछलनि।

गोप कुमार आस्तेसँ कहलनि — "फाइल कहैत अछि — ओ ओहि कथासँ बाहर निकलि गेलाह। के जनैए ओ कतय गेलाह, कोन नामसँ जीलाह, कोन गाममे बूढ़ भेलाह। मुदा

एतबा निश्चित — ओ फेर कहियो पानिक ऊपर नहि आयल। बूढ़ गोहि ओ जनैत छल, जे नव गोहि नहि जनैत छल — कहिया धरि डूबल रहबाक अछि।"

ओ पन्ना उनटौलनि।

"आ एही लेल, नन्द बाबू, हम बेर-बेर कहैत छी — कथा न्यायालय नहि, स्मृति थिक। न्यायालय ओकरा पकड़ैत अछि, जे पकड़मे आबैत अछि। स्मृति ओकरो मोन राखैत अछि, जे बचि गेल। कारण जे बचि गेल — बिरजू सन कोनो बूढ़ आदमी, जे कतहु चुपचाप बैसल अछि — ओ अगिला बेर, कोनो नव गोहिकेँ, वएह पुरान बाट फेर सिखा सकैत अछि। न्यायालय ओकरा बिसरि जाएत। मुदा स्मृति नहि बिसरत।"

अध्याय ११ : किनार

पनिकौआ पहिल बेर असगर छल।

बिरजू साह गायब भऽ गेल छलाह। ओ पुरान बाट, जे संख्याकेँ चुपचाप माटिपर उतारैत छल, बन्द भऽ गेल छल। ओ फोन, जे बरख भरि उत्तर दैत छल, आब मौन छल।

आब पनिकौआक लग पानिक भीतर करोड़क संख्या छल — मुदा ओकरा माटिपर आनऽवला हाथ नहि छल।

आ ओ पहिल बेर बुझलक जे ओ केना घेरा गेल अछि।

❖

ओ पानिमे अजेय छल। ई ओ बरख भरि जनैत छल।

पानिक तर ककरो हाथ ओकरा धरि नहि पहुँचैत छल। ओतय ओ सभसँ बलगर छल, सभसँ तेज छल, सभसँ सुरक्षित छल। ओतय कोनो पुलिस, कोनो कार्यदल, कोनो अभयकान्त झा ओकरा छूबि नहि सकैत छल।

मुदा एकटा बात ओ आब बुझि रहल छल — ओ पानिमे रहि कऽ जीबि नहि सकैत छल।

कारण पानिमे संख्या छल, भात नहि। पानिमे सपना छल, जीवन नहि। ओकरा माटि चाही छल — आ जखनहि ओ माटिपर पएर राखत, ओतय कियो प्रतीक्षामे छल।

ओ बुझि गेल जे ओकरा किनारसँ नहि, माटिसँ शिकार कएल जा रहल अछि। ओहि एक्के दिशासँ, जकरा ओ कहियो नहि जोगने छल। ओ पानिकेँ जोगने रहल; ओ अपन नामकेँ जोगने रहल; ओ अपन तरीकाकेँ जोगने रहल। मुदा ओ माटिकेँ नहि जोगने रहल — कारण ओ बुझैत छल जे ओकर लड़ाइ पानिमे अछि। आ ओकर शत्रु ठीक ओतयसँ आयल।

❖

अभयकान्त झा आब घेरा साँठि रहल छलाह।

पुरान बाट बन्द छल — बिरजू गेल। नव बाट पनिकौआ स्वयं बना नहि सकैत छल — कारण ओ बाट बनाएब बिरजूक विद्या छल, ओकर नहि। जँ ओ नव आदमी खोजय, तँ सभ नव आदमी एकटा नव खतरा; आ पनिकौआ आब ककरो विश्वास नहि करैत छल। जँ ओ पुरान पाइ छूबय, तँ ओतय पुलिस।

ओ चारू दिससँ घेरल छल।

"ओ आब ओ काज करत, जे सभ घेरल आदमी करैत अछि," अभयकान्त कहलनि। "ओ भागत। ओ अपन सभसँ जरूरी वस्तु लऽ, एहि पानिसँ दूर जेबाक प्रयास करत — सीमापार, कतहु दूर, जतय ई पानि नहि पहुँचय, जतय ओकर नाम, ओकर निशान, ओकर बरख भरिक अपराध — किछु नहि पहुँचय।"

"तँ हम सभ बाट बन्द कऽ दी?" सुनयना पुछलनि।

"नहि।"

अभयकान्त खिड़की लग गेलाह।

"हम एगो बाट खुजल छोड़ब।"

सुनयना आश्चर्यसँ तकलनि।

"घेरल गोहिकेँ जँ सभ बाट बन्द भेटैत अछि," अभयकान्त धीरेसँ कहलनि, "तँ ओ ओतहि नुका जाइत अछि, गहिर पानिमे उतरि जाइत अछि, आ फेर कहियो नहि भेटैए। ओ मास, बरख, चुप रहि सकैत अछि। मुदा जँ ओकरा एगो बाट खुजल देखाइत अछि, तँ ओ ओही बाटसँ भागय चाहत। आ ओ बाट — ओ बाट हम बनाएब। ओहि दिस, जतय हम ओकरा चाहैत छी।"

ओ नक्शापर आँगुर राखलनि।

"आ ओ बाट कमला-बलानक पार जाइत अछि।"

❖

पनिकौआकेँ एकटा बाट देखाओल गेल।

ओकरा नहि बूझल छल जे ई बाट ओकरा लेल बनाओल गेल छल। ओकरा लागल जे ई ओकर अपन चतुराई थिक — एकटा एहन रस्ता, जकरा ओ स्वयं ताकलक, जे पुरान बिरजूवला बाटसँ अलग छल, जे सुरक्षित बुझाइत छल, जकरा — ओ सोचलक — पुलिसकेँ नहि बूझल छैक।

ओ ओहि बाटपर बढ़ल।

बिरजूक चेतावनी ओकर कानमे बजैत छल — पानिक तर रह, ऊपर आबऽ जुनि। मुदा आब पानिक तर रहबाक उपाय नहि छल। बिरजू चलि गेल छल; बाट बन्द छल; असगर रहनाइ ओकरा खा रहल छल। आब खाली भागब बचल छल।

आ भागैत आदमी सभसँ बेसी दृश्य होइत अछि।

जे गोहि बरख भरि पानिक तर अदृश्य रहल छल, ओ आब पहिल बेर किनार दिस, खुजल पानि दिस, इजोत दिस बढ़ि रहल छल। ओ, जे कहियो देखाइ नहि देलक, आब भागबाक लेल, अपनाकेँ देखबऽ लेल बाध्य छल।

❖

नन्द आरुणि एहि पन्नापर बहुत देर हाथ राखने रहलाह।

"गोप बाबू," ओ धीरे सँ बजला, "आगाँ ओ क्षण अछि, जकर नाम एहि पूरा फाइलक ऊपर लिखल अछि।"

गोप कुमार धीरे सँ मूड़ी हिलौलनि। हुनकर स्वर कनेक आर धीमा भऽ गेल।

"हँ, नन्द बाबू। पहिल पानिमे खटाँस किनारपर, गोलीमे समाप्त भेल। ओकरा मारल गेल। मुदा ई दोसर पानिक गोहि किनारपर नहि — पानिमे समाप्त होएत। एकरा केओ नहि मारत। एकरा ओ पानि लेत, जकरा ई अपन घर बुझैत रहल।"

ओ किछु क्षण चुप रहलाह।

"एकर नाम पुरान लोक जनैत छल — ओ एक्के साधारण नाम, जे बहीक भीतर एक बेर आयल छल। आ ओही नामसँ ई पूरा कथा बान्हल अछि। मुदा ओ नाम, नन्द बाबू, अहाँ अखन नहि जनैत छी। ओ अन्तमे आओत — जखन आदमी समाप्त भऽ जाएत, आ केवल नाम बचल रहत।"

बाहर कमला-बलानक पानि साँझक अन्तिम रौदमे थिर छल।

मुदा नन्द आब स्पष्ट देखि रहल छलाह — पानिक बहुत तर, बरख भरि लुकल एकटा गोहि, पहिल आ अन्तिम बेर, ऊपर दिस उठि रहल छल।

ओ अगिला पन्ना दिस हाथ बढ़ौलनि।

ओहि पन्नाक ऊपर लिखल छल — जलसमाधि।

अध्याय १२ : जलसमाधि

ओहि राति कमला-बलान भरल छल।

बरखाक अन्तिम दिन छल। महीना भरिक पानि नदीमे उतरि आयल छल, आ नदी अपन दुनू कातसँ ऊपर उठि, खेत-पथारकेँ छूबि रहल छल। धार बीचमे कारी छल, किनारपर माटि सन। जे बाट दिनमे सोझ लगैत छल — जकरासँ लोक बरख भरि पार करैत छल — ओ राति ओ पानिमे डूबि गेल छल।

हवा नहि छल। तैयो पानिक भीतरसँ एकटा गहिर, लगातार आवाज उठि रहल छल — जेना नदी अपनेसँ किछु कहि रहल हो, कोनो एहन भाषामे, जे मनुष्यक कानसँ बहुत नीचाँ बजैत अछि।

पनिकौआ ओही राति पार करबाक निर्णय केने छल।

ओकरा लग एकटा बाट छल — ओ बाट, जे ओ बुझलक जे ओ स्वयं ताकलक। ओ नहि जनैत छल जे ओ बाट ओकरा लेल, बहुत सावधानीसँ, खुजल छोड़ल गेल छल। ओकरा एतबे बूझल छल जे माटिक सभ दोसर बाट बन्द अछि — पुरान बाट बिरजूक संग गेल, नव बाट ओ बना नहि सकल — आ केवल एहि एक्के बाटसँ ओ एहि पानिसँ दूर जा सकैत अछि। सीमापार, कतहु दूर, जतय ई पानि नहि पहुँचय; जतय ओकर नाम, ओकर निशान, ओकर बरख भरिक अपराध — किछु नहि पहुँचय।

❖

ओ एकटा छोट डोंगीमे बैसल।

ओकर संग एकटा झोरा छल।

ओहि झोरामे ओकर पूरा जीवन छल — किछु यन्त्र, किछु कागच, किछु ओ, जाहिमे ओकर करोड़क संख्या बन्द छल। जे बरख भरि ओ पानिक तर, अन्हारमे, नाम बिना, चेहरा बिना बनौने छल — ओ सभ ओहि एक झोरामे भरल छल। ओ झोरा ओकरा अपन देहसँ बेसी सटा कऽ राखने छल।

बिरजूक चेतावनी ओकर कानमे बजैत छल — पानिक तर रह, ऊपर आबऽ जुनि।

मुदा ओ आब पानिक तर नहि छल। ओ पानिक ऊपर छल, खुजल धारमे, राति-भरल आकाशक नीचाँ, एकटा छोट डोंगीमे — पहिल बेर पूर्ण रूपेँ दृश्य, पहिल बेर पूर्ण रूपेँ असगर।

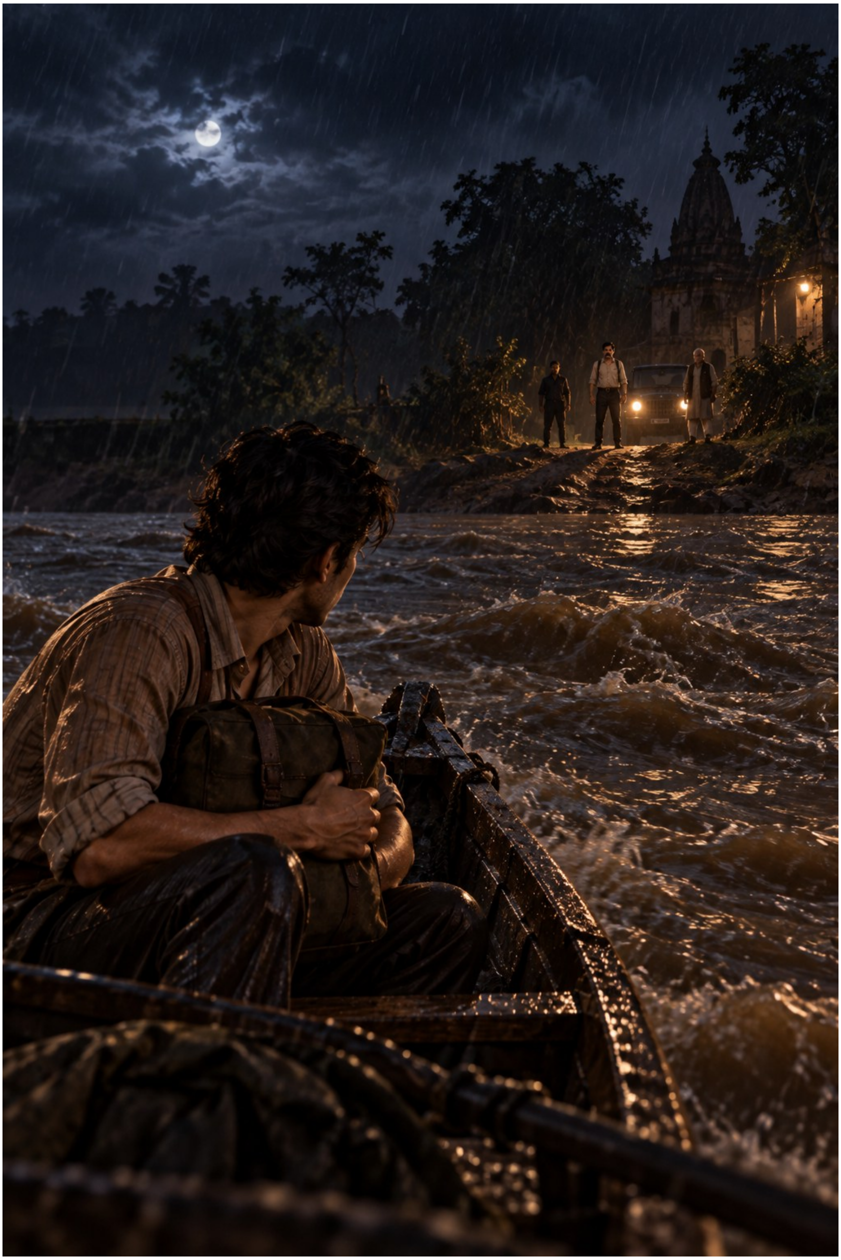

❖

दोसर कातपर अभयकान्त झा प्रतीक्षामे छलाह।

योजना सोझ छल। पनिकौआ पार करत; ओ दोसर कातपर पएर राखत; आ ओहि क्षण, पहिल बेर पानिसँ बाहर, माटिपर, ओ पकड़ल जाएत। बरख भरिक शिकार ओहि एक क्षणमे समाप्त होएत — बिना गोली, बिना रक्त, बिना खटाँसवला ओहि साँझक दोहराव।

अभयकान्त एहन अन्त चाहैत छलाह।

ओ बहुत मृत्यु देखने रहथि। ओ जनैत छलाह जे गोली कोनो प्रश्नक उत्तर नहि होइए — ओ केवल प्रश्नकेँ चुप करा दैत अछि। ओ चाहैत छलाह जे ई गोहि जीवित पकड़ाय, ताकि ओकर जाल, ओकर तरीका, ओकर पूरा निशान — सभ पढ़ल जा सकय, बुझल जा सकय, आ अगिला बेरक लेल मोन राखल जा सकय।

मुदा नदीक अपन योजना छल।

❖

फाइल एहि ठाम बहुत कम लिखैत अछि।

नन्द आरुणिक प्रतिलिपिमे ओहि रातिक डोंगीक ओ नाव नहि अछि; धारक बीचक ओहि भँवरक विस्तार नहि, जे अचानक उठल; ओहि झोराक भारक वर्णन नहि, जे ओकरा नीचाँ घीचलक। गोप कुमार बेर-बेर कहने रहथि — मृत्युक विवरण बढ़ेलासँ मृत्यु अधिक सत्य नहि होइए।

तेँ प्रतिलिपिमे केवल एतबा लिखल अछि —

डोंगी बीच धार धरि पहुँचल। फेर भँवरमे पड़ल। फेर डगमग भेल। दोसर कातपर ठाढ़ लोक केवल एकटा आवाज सुनलक — पानिक; आ ओकर भीतर, एक क्षण लेल, एकटा मनुष्यक। फेर पानि फेर ओतबी थिर भऽ गेल, जतबा पहिने छल।

अभयकान्त पानिमे उतरबाक प्रयास केलनि।

दोसर लोक हुनका रोकलनि। ओहि रातिक ओहि धारमे उतरब स्वयं जलसमाधि छल; एकटा मृत्युकेँ रोकबाक लेल दोसर मृत्यु होइत-होइत बचल।

भोर धरि लोक किनारपर ठाढ़ रहल।

❖

पानि किछु घुरा देलक।

एकटा टूटल डोंगी — जे धारमे बहैत, बहुत दूर, किनारक झोंझमे अँटकल।

एकटा भीजल झोरा — जकर भीतरक सभ संख्या, सभ कागच, पानिमे धुआ गेल छल। ओहि झोरामे, जे बरख भरि ओकर पूरा जीवन छल, आब केवल भीजल, पढ़ल नहि जायबला किछु टुकड़ा बचल छल।

आ किनारक बालुपर, बहुत दूर, एक जोड़ी चप्पल — जकर कोनो मालिक नहि छल।

मुदा देह नहि घुरल।

बहुत दिन धरि खोज भेल। कमला-बलानक दुनू कातक गाम पूछल गेल। नाविक बजाओल गेल। जाल फेकल गेल। मुदा नदी ओ देह नहि देलक।

गोहि, जे बरख भरि पानिक तर लुकल रहल छल, ओ अन्तमे ओही पानिकेँ अपन समाधि बना लेलक — बिना कोनो चिन्ह छोड़ने, बिना कोनो देह छोड़ने, जेना ओ कहियो छलहे नहि।

❖

आ जखन सभ किछु शान्त भेल, तखन ओ बात भेटल, जकर प्रतीक्षा पूरा कथा करैत रहल छल — ओकर असली नाम।

सुनयना ठाकुर ओहि पुरान कस्बाक जनगणनाक पन्नासँ ओकरा निकाललनि।

एकटा भट्ठा-मजदूरक बेटा। जे कइएक बरख पहिने, तेरह बरखक उमरमे, ई कस्बा छोड़ि गेल छल। जकर पिता असम-पंजाब भटकैत रहलाह; जकर माए दोसरक खेतमे रोपनी करैत रहलीह; जकर हाथमे गामक लोक जादू देखने रहय; जकरा एकटा दोकानदार चोर कहने रहैक।

नाम ओतेक साधारण छल जे ककरो मोन नहि रहल छल।

छोटन।

केवल छोटन। कोनो उपाधि नहि, कोनो पदवी नहि, कोनो भय नहि। एकटा गामक नाम, एकटा दुलारक नाम, जे बड़का लोकक बीच कहियो नहि सुनल गेल छल। ओहि पूरा फाइलमे, जाहिमे तलगोहि छल, पनिकौआ छल, करोड़क संख्या छल — ओहि सभक तर, ई एक्केटा साधारण नाम छल, जकरा केओ चिन्हने नहि छल।

❖

अभयकान्त झा ओहि नामकेँ बहुत देर तकैत रहलाह।

"जे आदमी चाहैत छल जे पूरा संसार ओकरा देखय," ओ अन्तमे आस्तेसँ कहलनि, "ओकरा अन्तमे ओ नाम भेटल, जकरा कियो नहि चिन्हैत छल।"

ओ ओहि पन्नाकेँ मेजपर राखलनि।

"ओ अपन नाम मेटौलक, ताकि पैघ बनय। ओ तलगोहि बनल, पनिकौआ बनल, ओ नाम बनल, जकरा पूरा नगर बिना जनने डेराइत छल। मुदा पानि ओकर सभ पैघ नाम लऽ लेलक — तलगोहि, पनिकौआ, सभ — आ केवल ओ छोटका नाम छोड़ि देलक, जे ओकर सभसँ पहिने छल। छोटन।"

ओ किछु क्षण चुप रहलाह।

"खटाँस मरल, तँ ओकर देह अखबारक पहिल पन्नापर छल। सभ ओकरा देखलक। ई मरल, तँ ओकर कोनो देहे नहि। ओकरा केओ नहि देखलक। जे आदमी पूरा जीवन देखल जेबाक भूखमे जील, ओकर मृत्युकेँ सेहो केओ नहि देखि सकल। पानि ओकरा ओ देलक, जकरासँ ओ पूरा जीवन भागैत रहल — पूर्ण अदृश्यता।"

❖

नन्द आरुणि बहुत देर चुप रहलाह।

बाहर कमला-बलानक पानि भोरक हल्लुक इजोतमे थिर छल। ओ वएह पानि छल, जे पूरा कथा भरि थिर रहल छल — आ ओकर तर की-की भेल, से ऊपरसँ कहियो नहि देखायल।

"एतबा?" ओ अन्तमे पुछलनि, ठीक ओही स्वरमे, जाहि स्वरमे ओ खटाँसवला अन्तपर पुछने रहथि।

गोप कुमार आस्तेसँ बजला — "एतबा, नन्द बाबू। मृत्यु एतबे होइत अछि। जे आदमी सभसँ बलगर छल, ओ अपन माएक घर पक्का करबाक भूखमे पकड़मे आयल; आ जे सभसँ अदृश्य छल, ओ एकटा साधारण नाम बनि, एकटा भरल नदीमे, बिना देह छोड़ने समाप्त भऽ गेल। बाकी जे हम एहिमे जोड़ब, ओ हमर डर हएत, ओकर मृत्यु नहि।"

उपसंहार

नन्द आरुणि दोसर पेटारक अन्तिम पन्ना बन्द केलनि।

"एकटा गोहि मरल," ओ धीरे सँ बजला। "खटाँस जकाँ। दोसर पानिमे, दोसर नामसँ, दोसर ढंगसँ — मुदा अन्त वएह। किनार, आ फेर समाप्ति।"

गोप कुमार तुरन्त किछु नहि कहलनि।

ओ खिड़कीसँ बाहर, दूर पानि दिस देखलनि। भोरक इजोत आब पूरा उठि आयल छल; चन्ना गाछीक पात ओहिमे चमकैत छल।

"मुदा एक बात मोन राखू, नन्द बाबू," ओ अन्तमे कहलनि। "खटाँसवला फाइलक अन्तमे हम अहाँकेँ रोकने रही — 'गोहि मरल, पानि साफ भऽ गेल' — ई लिखबासँ। मोन अछि?"

नन्द मूड़ी हिलौलनि।

"आइयो हम वएह बात कहब। छोटन मरल — मुदा जालक तरीका नहि मरल। बिरजू साह कतहु जीवित छथि, आ हुनकर बाट हुनकर संग जीवित अछि। ओ छोट-छोट ठग, जे छोटन जोड़ने छल, ओ सभ आइयो कतहु-ने-कतहु अछि। छोटनक नाम मेटा गेल; ओकर तरीका पानिमे बहि गेल — मुदा पानिसँ किछु कहियो पूर्ण रूपेँ नहि मेटाइए।"

"तखन हम की जितलहुँ?" नन्द पुछलनि।

❖

गोप कुमार पहिल बेर मुस्कुरेलाह — ओहने थाकल, गहींर मुस्कीसँ, जे बहुत बरखक अभिलेख पढ़लाक बाद अबैत अछि।

"अहाँ एकटा नाम नहि जितलहुँ, नन्द बाबू। नाम तँ पानि लऽ गेल। अहाँ एकटा निशान जितलहुँ।"

ओ पेटारपर हाथ राखलनि।

"पहिल बेर एहि नगरक स्मृतिमे ई लिखल गेल जे अपराधी केवल आदमी नहि होइए — ओ तरीका सेहो होइत अछि। खटाँस बन्दूक छल; छोटन संख्या। दुनू अलग नाम, अलग पानि। मुदा दुनूक तर एक्के जाल छल — पाइ, भय, संरक्षण, आ ओ भूख, जे आदमीकेँ किनार धरि घीचि आनैत अछि।"

ओ नन्द दिस देखलनि।

"जे समाज केवल आदमीक नाम मोन राखत, ओ सभ नव नामसँ फेर छलायत। ओ खटाँसकेँ मारि सोचत, अपराध समाप्त; आ छोटन आबि जाएत। ओ छोटनकेँ मारि सोचत, आब शान्ति; आ तेसर आबि जाएत। मुदा जे समाज ओकर तरीका मोन राखत, ओ अगिला गोहिकेँ ओकर पहिल हिलबे सँ बुझि जाएत — ओ नामक प्रतीक्षा नहि करत। एतबे जीत थिक, नन्द बाबू — आ एतबे बहुत थिक।"

❖

नन्द आरुणि फाइलक सभ पन्ना फेर एक बेर बराबर कऽ मोटरी बान्हलनि।

ऊपर पेंसिलसँ लिखल पुरान शीर्षक एखनहुँ हल्लुक देखाइत छल — "बादक पानि।"

ओ ओकर नीचाँ अपन हाथसँ एक पंक्ति जोड़लनि — ठीक ओहिना, जेना बहुत बरख पहिने ओ खटाँसवला मोटरीपर एक पंक्ति जोड़ने रहथि।

"पहिल पानिमे गोहि बन्दूक छल; दोसरमे संख्या। मुदा पानि वएह रहल, आ गोहि वएह। नाम बदलैत रहत। हमरा निशान मोन राखय पड़त।"

गोप कुमार मोटरी पेटारमे राखि देलनि।

दुनू पेटार आब कात-कात छल — पहिल पानि, दोसर पानि। एकटा बन्दूकक, एकटा संख्याक। एकटा ओहि गोहिक, जकरा सभ देखलक; एकटा ओहि गोहिक, जकरा केओ नहि देखलक। मुदा दुनूक भीतर एक्के जाल, एक्के चेतावनी।

❖

"आब?" नन्द पुछलनि।

गोप कुमार पेटारक ढकनी बन्द करैत कहलनि — "आब हम प्रतीक्षा करब, नन्द बाबू।"

ओ खिड़की दिस देखलनि।

"पानि थिर अछि। आ थिर पानिक विषयमे सभसँ बेसी तखन सोचय पड़ैत अछि, जखन ओ सभसँ बेसी शान्त हो। पहिल गोहि बन्दूक छल। दोसर संख्या। तेसर की हएत — से हम नहि जनैत छी। सम्भवतः कोनो एहन पानि, जकर नाम हम आइ धरि सुननहुँ नहि छी। मुदा एतबा जनैत छी — ओ आओत। आ जखन आओत, तखन ओ फेर नव पानि, नव नामसँ आओत।"

ओ किछु क्षण चुप रहलाह।

"आ ओहि दिन, नन्द बाबू, जँ ककरो एहि दुनू पेटारक निशान मोन रहत — जँ ककरो मोन रहत जे खटाँस आ छोटन, बन्दूक आ संख्या, अन्तमे एक्के जाल छल — तँ नगर फेर ओतेक भयभीत नहि हएत, जतेक ओ ओहि पहिल साँझ भेल छल, जखन पुरान बजारमे पहिल देह खसल छल, आ केओ किछु देखने नहि छल।"

❖

बाहर चन्ना गाछीक पातमे हल्लुक हवा लागल।

दूर, कमला-बलानक पानि भोरक रौदमे चकमक कऽ रहल छल — शान्त, थिर, निर्दोष सन। ओ वएह पानि छल, जाहिमे बरखो पहिने खटाँसक भय डूबल छल, आ जाहिमे अखने छोटनक अदृश्यता समा गेल छल। ऊपरसँ ओ किछु नहि कहैत छल।

मुदा नन्द आरुणि आब जनैत छलाह जे थिर पानि की-की मोन राखैत अछि।

आ ओकर तर, बहुत नीचाँ, ओ ई सेहो जनैत छलाह — अगिला गोहि, जकर नाम कियो एखन नहि जनै छी, केना चुपचाप अपन ठाम बदलि रहल अछि; आ केना, कोनो दिन, ओ फेर पानिकेँ हल्लुकसँ हिलाएत — आ ओहि दिन प्रश्न ई नहि हएत जे ओकर नाम की; प्रश्न ई हएत जे ककरो ओकर निशान मोन अछि कि नहि।

❖

समाप्त

अध्याय ० : जालक भीतर जाल

“समाप्त” शब्द पढ़ि नन्द आरुणि उठबाक लेल हाथ मेजपर रखलनि।

गोप कुमार कहलनि — “बैसू।”

नन्द ठमकि गेलाह।

“अखन किछु बाकी अछि?”

“फाइलमे नहि,” गोप कुमार कहलनि। “रेकर्डमे।”

❖

गोप कुमार दोसर पेटार फेर नहि खोललनि। ओ ओकर पाछाँक काठपर आँगुर फेरौलनि। बहुत पुरान काठ छल; धूरा-गर्दासँ ओकर रंग सभ कात एक्के बुझाइत छल। मुदा एक ठाम काठक रेखा कने अलग छल। ओ दबौलनि। भीतरसँ पातर खाँचा सरकि आयल।

ओहि खाँचामे एकटा करिया मोटरी छल। ने शीर्षक, ने तिथि। केवल लाल पेंसिलसँ एक शब्द — “गुप्त।”

नन्दक आँखि गोप कुमार दिस उठल।

“अहाँ हमरा जे पढ़ेलहुँ, से अपूर्ण छल?”

“नहि,” गोप कुमार शान्त स्वरमे कहलनि। “से सार्वजनिक अभिलेखक पूरा सत्य छल। मुदा सार्वजनिक सत्य आ पूरा सत्य सभ काल एक्के नहि होइत अछि। कखनो-कखनो किछु बात समयसँ पहिने बाहर आबि जाए, तँ अपराधी नहि, ओकर जाल बचि जाइत अछि।”

ओ करिया मोटरी नन्दक सोझाँ राखलनि।

“जलसमाधि ओकर अन्त नहि छल। ओ ओकर अन्तिम कूटनाम छल।”

❖

कमला-बलानक ओहि रातिक बाद एगारहम दिन सुनयना ठाकुर फेर ओ झोरा देखलनि, जे पानिसँ भीजल भेटल छल। सभ यन्त्र निष्क्रिय छल, कागच धुआ गेल छल, आ ऊपरसँ देखल जाए तँ ओहि झोरामे किछुओ एहन नहि छल, जाहिसँ कियो कोनो जीवित आदमी धरि पहुँचि सकय।

मुदा सुनयना झोराकेँ नहि, छोटनक आदतिकेँ पढ़ैत छलीह।

ओ कहलनि — “जे आदमी बरख भरि अपना पाछाँ कोनो सोझ निशान नहि छोड़लक, से भागैत काल अपन पूरा जीवन एक्के झोरामे किएक राखत? ई झोरा ओकर जीवन नहि। ई हमरा लेल बनाओल उत्तर अछि।”

अभयकान्त झा पुछलनि — “तखन देह?”

“देह नहि भेटल। एतबे तथ्य अछि। ‘मरि गेल’ अनुमान अछि।”

अरुणेश मिश्र, जे एखन धरि चुप रहथि, पुरान वाक्य दोहरा देलनि — “अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू।”

सुनयना मूड़ी हिलौलनि। “तेँ अखन हम ओकरा जीवितो नहि मानब। हम केवल ई मानब जे प्रश्न बन्द नहि भेल अछि।”

❖

प्रश्न बन्द नहि भेल, आ कार्यदल सेहो नहि रुकल।

मृत्युक समाचार बाहर ओहिना रहऽ देल गेल। नदी एकटा नीक पर्दा बनि चुकल छल। छोटन जँ सचमुच बचल अछि, तँ ओकरा सभसँ सुरक्षित वएह भ्रम लागत जे संसार ओकरा मरल मानि चुकल अछि।

एहि बेर कार्यदल ओकरा नामसँ नहि ताकलक। फोनक संख्या, नकली परिचय, नब खाता — सभ बदलि सकैत छल। सुनयना ओहि वस्तुकेँ ताकऽ लगलीह, जे छोटन बेर-बेर बदललाक बादो नहि बदलने छल — काज करबाक ओकर लय।

ओ जालमे पैसैत काल कोन बात पहिने जाँचैत छल, कतबा देर चुप रहैत छल, कोन बाट छोड़ि फेर ओही बाट दिस घुरैत छल, आ कोन छोट संकेतपर असामान्य सावधानी देखबैत छल — ई सभ मिलि एकटा एहन हस्ताक्षर बनबैत छल, जकरा ओ स्वयं हस्ताक्षर नहि मानैत छल।

सुनयना कहलनि — “नाम मेटाएब सोझ अछि। आदति मेटाएब कठिन।”

अभयकान्त हुनका दिस तकलनि। “नाम बिना आदमी पकड़ब?”

“आदमी नहि,” सुनयना कहलनि, “पहिने ओकर तरीका पकड़ब। आदमी अपने पाछाँ आबि जाएत।”

❖

न्यायिक अनुमति लेल गेल। पुरान जालक जे अंश कार्यदलक हाथमे आबि चुकल छल, ओकर एकटा नियंत्रित छाह बनाओल गेल — एहन छाह, जे बाहरसँ छोटनक पुरान संसार सन बुझाय, मुदा जकर सभ बाट अन्तमे कार्यदलक नजरिक भीतर घुरि आबय।

ओहि छाह-जालमे कोनो वास्तविक पीड़ित नहि छल, कोनो वास्तविक पाइ नहि छल। केवल एतबा छल जे जँ छोटन जीवित अछि, आ जँ ओकर भीतर पुरान जालपर अधिकारक भूख एखनहुँ अछि, तँ ओकरा एक बेर घुरि तकबाक लोभ होय।

तीन सप्ताह किछु नहि भेल।

चारिम सप्ताह एकटा बहुत छोट संकेत आयल। एतेक छोट जे दोसर कियो ओकरा सामान्य त्रुटि बुझि छोड़ि दैत। सुनयना ओकरा तीन बेर पढ़लनि।

“ई ओ नहि कहल जा सकैत अछि,” अरुणेश मिश्र कहलनि।

“नहि,” सुनयना मानलनि। “मुदा ई ओहि दिशाक पहिल हिलब अछि।”

ओ लोक प्रतीक्षा केलक।

दोसर संकेत पाँच दिन बाद आयल। तेसर दू सप्ताह बाद। सभ बेर नाम अलग, यन्त्र अलग, नगर अलग। मुदा जाँचबाक क्रम, ठहरबाक ढंग, आ फेर घुरि अएबाक लय वएह।

छोटन अपन चेहरा बदलि सकैत छल, अपन नाम बदलि सकैत छल, अपन ठाम बदलि सकैत छल। मुदा अपन धैर्यक चाल नहि बदलि सकल।

❖

तखन सुनयना जालक भीतर एकटा दोसर जाल खोललनि।

छाह-जाल छोटनकेँ उत्तर देबऽ लागल — ओतेक मात्र, जतेकसँ ओकरा विश्वास हो जे पुरान जालक किछु हिस्सा ठीके बचि गेल अछि। छोटन एक बेरमे भीतर नहि आयल। ओ दूरसँ परखैत रहल। फेर कने लग आयल। फेर घुरि गेल। फेर आयल।

ओ सोचैत रहल जे ओ जालकेँ जाँचि रहल अछि। वास्तवमे जाल ओकरा जाँचि रहल छल।

ओ सोचैत रहल जे ओ अपन पुरान लोक सभकेँ फेर एक सूत्रमे बान्हि रहल अछि। वास्तवमे कार्यदल ओहि सूत्रक दुनू छोर पकड़ि चुकल छल।

छोटनक पुरान नियम छल — स्वयं सोझाँ नहि आबू; दोसराक हाथसँ काज कराउ; लोककेँ एक-दोसरसँ अलग राखू। कार्यदल ओ नियम उलटि देलक। ओ कोनो छोट मध्यस्थकेँ तुरत नहि पकड़लक। ओ केवल देखैत रहल जे कोन कड़ी कोन कड़ी धरि जाइत अछि।

एक कड़ी दोसर धरि गेल। दोसर तेसर धरि। नाम बदलैत रहल, चेहरा बदलैत रहल, मुदा जालक शाखा सभ अन्तमे एक्के बिन्दु दिस मुड़ऽ लागल।

ओ बिन्दु कोनो पैघ भवन नहि छल। ने महग होटल, ने गुप्त अड्डा। सीमाक लग एक छोट कस्बाक पुरान बजारमे मोबाइल मरम्मतिक एकटा गुमटी छल।

गुमटीक भीतर एकटा दुबर, चुप आदमी दिन भरि फूटल स्क्रीन, तार, बैटरी आ पुरान रेडियोक बीच बैसल रहैत छल। लोक ओकरा दोसर नामसँ चिन्हैत छल।

ओकर हाथ एखनहुँ यन्त्र खोलैत काल ओहिना स्थिर रहैत छल, जेना तेरह बरखक ओइ बालकक हाथ रहैत छल।

❖

कार्यदल तीन दिन गुमटी नहि छूलक।

चारिम दिन सेहो नहि।

पाँचम दिन सुनयना कहलनि — “एखन धरि हमरा लग आदमी अछि; आब प्रमाण चाही।”

तखन छाह-जालक भीतर ओहि आदमीक अपन क्रिया, ओकर पुरान जालक रेकर्ड, आ गुमटीसँ जुड़ैत मानवीय कड़ी सभ एक-दोसरकेँ काटलक नहि, पुष्ट करऽ लागल। अलग-अलग स्रोतमेसँ आयल तथ्य एक्के आकृति बनौलक।

अरुणेश मिश्र बहुत देर कागच देखलनि। फेर कलम राखि देलनि।

“आब ई अनुमान नहि।”

अभयकान्त झा केवल एतबा कहलनि — “एहि बेर पानिमे नहि। जीवित।”

❖

भोरक पहिल इजोतमे गुमटी खुजल।

छोटन भीतर बैसि एकटा पुरान फोनक पाछाँक ढक्कन खोलि रहल छल। बाहर बजार एखन पूर्ण जागल नहि छल। दूधवला गेल, एकटा झाड़ूवला बाट बहारि रहल छल, दूरसँ पहिल बसक घरघराहटि आबि रहल छल।

दरबज्जापर सुनयना ठाढ़ भेलीह। हुनकर पाछाँ अभयकान्त झा।

छोटन माथ उठौलक। एक क्षण लेल ओकर आँखिमे कोनो भय नहि आयल। केवल हिसाब। दरबज्जा, पाछाँक झरोखा, मेजपर पड़ल यन्त्र, दुनू अधिकारीक बीचक दूरी — सभ एक्के क्षणमे तौलि लेलक।

फेर ओकर नजर सुनयनापर थिर भेल।

“हम अहाँकेँ चिन्हैत नहि छी,” ओ कहलक।

“हम अहाँक नामसँ नहि आयल छी,” सुनयना उत्तर देलनि। “हम अहाँक तरीकासँ आयल छी।”

छोटनक आँगुर मेजपर पड़ल फोन दिस सरकल।

“ओकर आवश्यकता नहि,” सुनयना कहलनि। “अहाँ जे मेटाबऽ चाहैत छी, ओकर प्रमाण अहाँक हाथ पहुँचबाक पहिने सुरक्षित भऽ गेल अछि।”

छोटन पहिल बेर मुस्कुरायल — बहुत हल्लुक, थाकल मुस्की।

“तखन नदी?”

अभयकान्त कहलनि — “नदी हमरा किछु नहि कहलक, कारण ओ साइबर नदी छल, जकरा हम सभ कमला-बलान नाम देने रहिऐ। मुदा ओइ बेर अहाँ हमर पाछाँ छलहुँ, अहाँ बोर देने छलहुँ, हमरा सभकेँ लागल जे हम सभ बोर देने छी। मुदा नदी नहि अहाँक आदति सभटा कहि देलक।”

छोटन चुप रहल।

सुनयना ओकर सोझाँ कागच रखलनि।

“छोटन।”

ओहि एक शब्दपर ओकर मुस्की टूटल।

“ओ आदमी मरि गेल,” छोटन कहलक।

“नहि,” सुनयना आस्तेसँ बजलीह। “तलगोहि मरल। पनिकौआ मरल। छोटन बचल रहल। आ एही कारण अहाँ पकड़ायल छी।”

❖

ओहि दिन कोनो गोली नहि चलल। कोनो नदी नहि गरजल। कोनो देह नहि खसल।

छोटन जीवित पकड़ल गेल।

बादक जाँचसँ एतबा स्पष्ट भेल जे कमला-बलानक ओहि राति ओ डूबल नहि छल। डोंगीक डगमगाएब, भीजल झोरा, चप्पल, आ पानिमे मेटायल कागच — ई सभ मिलि एकटा एहन दृश्य बनौने छल, जकरा देखि सभक ध्यान “मृत्यु” शब्दपर अँटकि जाए। नदी ओकर शरण नहि छल; ओकर पर्दा छल। सभटा साइबर छल, साइबर-नदी, साइबर झोरा, साइबर डोंगी, साइबर चप्पल, साइबर कागच।

ओ साइबर-पानिक भीतर समाप्त नहि भेल छल। ओ केवल अपन एकटा नाम साइबर-पानिमे छोड़ि, दोसर नामसँ बाहर निकलि गेल छल।

मुदा ओ एकटा बात गलत बूझने छल। ओकरा लगैत छल जे जँ नाम मेटा देल जाए तँ इतिहास सेहो मेटा जाइत अछि।

इतिहास नामसँ कम, आदतिसँ बेसी मोन राखैत अछि।

❖

छोटनक गिरफ्तारी तत्काल सार्वजनिक नहि कएल गेल। पुरान जालक किछु कड़ी एखनहुँ बाहर छल। जँ खबर पसरैत, तँ ओ सभ फेर नाम बदलि पसरि जाइत। तेँ सार्वजनिक अभिलेखमे “जलसमाधि”क कथा ओहिना रहऽ देल गेल, आ गुप्त काज अपन गति सँ चलैत रहल।

छोटनक यन्त्र आ रेकर्डसँ भेटल स्वतंत्र प्रमाणक आधारपर जालक अनेक कड़ी चिन्हल गेल। ककरो नाम ओकर कथन मात्रसँ नहि जोड़ल गेल; सभ कड़ी अलग

प्रमाणसँ जाँचल गेल। जे दोषी छल, ओकर विरुद्ध विधिसम्मत काज भेल; जे केवल छाह छल, ओकरा छोड़ि देल गेल।

अरुणेश मिश्रक एक्के नियम अन्त धरि कायम रहल — अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू।

आ सुनयनाक नियम सेहो — नामक पाछाँ नहि, तरीकाक पाछाँ जाउ।

❖

नन्द आरुणि करिया मोटरीक अन्तिम पन्ना धरि पहुँचलाह।

ओहि पन्नापर गोप कुमारक हाथक लिखावट छल। अक्षर छोट, साफ, बिना अलंकारक। ऊपर लिखल छल — “गोप कुमारक गुप्त रेकर्ड : बादक पानि — अन्तिम प्रविष्टि।”

नन्द पढ़लनि —

“विषय : छोटन। प्रयुक्त कूटनाम : तलगोहि, पनिकौआ, अन्य अनेक।”

“स्थिति : जीवित। न्यायिक हिरासत।”

“सार्वजनिक अभिलेख : जलसमाधि। तत्कालीन संचालनगत कारणसँ अपरिवर्तित।”

“पकड़बाक आधार : कोनो एक नाम, नम्बर वा यन्त्र नहि। व्यवहारक पुनरावृत्ति, छाह-जालमे ओकर अपन तरीका, मानवीय कड़ी, आ स्वतंत्र भौतिक प्रमाणक संगम।”

“टिप्पणी : गोहि पानिमे नहि डूबल। ओकर मृत्यु एकटा कूटनाम छल। ओकरा ओकर अपन जालक छाहमे जीवित पकड़ल गेल।”

❖

नन्द पन्नासँ आँखि उठौलनि।

“तखन अहाँ पहिने हमरा किएक नहि कहलहुँ?”

गोप कुमार मोटरीपर हाथ रखलनि।

“किएक तँ किछु सत्यक रक्षा चुप्पीसँ होइत अछि। आ किएक तँ हम चाहैत रही जे अहाँ पहिने ओ गलती पूरा अनुभव करू, जे संसार केने छल — देह नहि भेटल, तेँ मृत्यु मानि लेलक। तखन बुझू जे एहन अपराधीकेँ साइबर-नदीमे नहि पकड़ल जा सकैत अछि, नाम नहि पकड़ैत अछि। ओकरा ओकर तरीका पकड़ैत अछि।”

नन्द पुरान दोसर पेटार दिस देखलनि। ऊपर एखनहुँ पेंसिलसँ लिखल छल — “बादक पानि।”

“आ आब ई करिया मोटरी कतऽ रहत?”

“एखन,” गोप कुमार कहलनि, “ओही गुप्त खाँचामे। जाबत एहि रेकर्डक बाहर अएबाक समय नहि हो।”

नन्द मोटरी बन्द केलनि।

बाहर कमला-बलानक पानि भोरक रौदमे थिर छल। एहि बेर ओकरा देखैत नन्दक मोनमे मृत्यु नहि आयल। हुनका बुझायल — पानि कखनो-कखनो आदमीकेँ नहि, केवल ओकर बनाओल कथा डुबबैत अछि।

गोहि मरल नहि छल। ओकर कूटनाम मरल छल।

छोटन जीवित छल — न्यायिक हिरासतमे, पहिल बेर अपन असली नामक सोझाँ असगर।

❖

समाप्तिक बाट तकैत